आचार्य सुमन रचित शिवपंचाक्षर

न

नन्दी निकटे नागेश नटेश्वर
नाथ नित्य नाचथि नङटे
नयनानल नियमित निशानाथ
नटवर नकारमय नमस्कार

मः

मदनान्तक मृत्युञ्जय महेश
मानी मसान-निलयन मठेश
महिमामय माटिक महादेव
मनसा मकारमय नमस्कार

शि

शिर शोभित शिशु शीत-शीत
सुरसरिक शीकरेँ शिशिर शीश
शीलित शेषे ँ शिव शुचि शरीर
शंकर शकारमय नमस्कार

वा

विषपायी विषधर व्यापित वपु
वृषवाहन वसन-विहीन विदित
वर वरद बड़दवाहन विभूति
वं वं वकारमय नमस्कार

य

यतिवर यज्ञान्तक यज्ञजनक
युगजीवी याज्ञिक योगयुक्त
योगी यक्षेशक सहयोगी
जय जय यकारमय नमस्कार



सुमनांजलि

- चन्द्रभानु सिंह

विरज सून भेल एक श्याम बिन
एक श्याम बिन बगिया खाली
सारस्वत बैसार उसड़लै
आ ब्रजेन्द्र सदनक ओ लाली
एखनहि तऽ ओ जागल छलथिन
औंघीकेर निसासँ मातल
काँच निन्न टोकियौ जुनि एखन
सौंसे जिनगी रहल झमारल
हेतै फेर प्रभातो लगले
टुसिएतै पतझड़ मे डाली
भारतेंदु बंकिम सन छलथिन
प्राण-प्रतिष्ठा मूर्त्तिमंत जे
मिथिला-मैथिल-मैथिलीक छल
प्राण कोश अवतरित संत जे
अचके बल्लिक डारि टूटि गेल
फुलडाली छूटल, गेल माली
जहिना गाँधी बिन स्वदेश छल,
शोकाकुल अछि सौंसे मिथिला
गाछ-बिरिछ जन-मन मौलायल
दुखसँ कातर पातर कमला
सान्ध्य गगन केर रंग महलसँ
हेरा गेलै खसि कानक बाली
गंग-तरंगे सींचि समारल जे
निज भाषाकेर धरातल
महाकाव्य केर जे स्वरूप छल
निज समाज के सभपर तानल
अपन जवारक जनवाणी के
देल मिसरिया घोलक प्याली

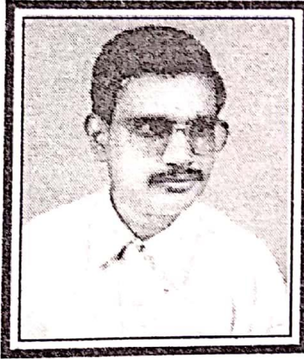
मिथिला सुरभि

मैथिली त्रैमासिक पत्रिका

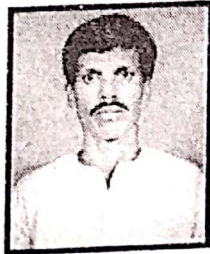
फरवरी - अप्रील 2002 | साहित्यमहारथी सुमन विशेषांक | मूल्य 10 टाका



राजनारायण मिश्र
मुख्य प्रबन्धक



अमलेन्दु शेखर पाठक
अतिथि सम्पादक



किशोर कुमार झा 'सिक्किन'
सम्पादक

प्रकाशक

आंकुश समिति, बहेड़ी, दरभंगा

संचालन ओ संपादन अव्यवसायिक एवं अवैतनिक। एहि अंकमे व्यक्त विचार लेखकक थिक।

अनुक्रमणिका

कृति-प्रसंग

कथा

कविता

सम्पादकीय

तीर्थराज प्रयाग

साहित्य-गंगा ओ पत्रकारिता-यमुनामे मिझरायल राजनीति-सरस्वतीक कलकल प्रवाह आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'कें तीर्थराज प्रयाग बना देलकनि। मानापमान एके रंग। जे डूब देलक से शुचिता पौलक। समाजसेवाक घाटपर जे क्यौ आयल समानरूपसँ आदर पौलक। जहिना साहित्य ओ भाषोत्थानक चिन्ता, तहिना पत्रकारिताक। राजनीतिक दलमे दक्षिणपंथक धुर समर्थ रहितो सभी विचारधाराक लोक लेल एके रंग। अक्रोधी ओ शत्रुजित महामानव आचार्य सुमनक जीवन चरितकेँ महाग्रंथ टा मे समटेब सम्भव।

सुमनक साहित्य-गंगाक कलकल प्रवाहमे डूब देब सर्वसाधारणक लेल सर्वथा असम्भव। तेँ भारतीय सभ्यता संस्कृति ओ प्राच्य भाषा-साहित्यक विशाल वाङमय सँ कनेको संपृक्त नहि रहनिहार भसिआइते रहलाह। पाश्चात्य भाषा साहित्यक अवगाहन मात्र कयनिहारके "सुमन-साहित्यमे कतबो अहुड़िया कटने किछुओ भेटब असम्भव। शिवपंचाक्षर लिखि आद्यगुरु शंकराचार्यकें ओ गंगा-स्तुति रचि भर्तृहरिके" चुनौती देनिहार महाकवि सुमनक साहित्य के विशाल श्रृंखलामे विद्यमान चिन्तनके "आत्मसात करबालेल पात्रता सेहो जरूरी। एहन नहि जे सुमन साहित्यमे पाश्चात्यक मनीषी लोकनिक चिन्तनधाराक अभाव छैक। ओकरा देखबाक ओ गुणबाक योग्यता सेहो अपेक्षित। हुनका साहित्यकेँ वस्तुतः पढ़निहार नहि भेटलनि जे शब्द-शब्दमे विद्यमान ऋचाक अन्वेषण कऽ पबैत। दुर्भाग्यवश हुनका साहित्यमे 'वर्ड्स वर्थ' आ 'बनार्डशा' क काव्य कौशल तकबाक प्रयासो करवालेल दुहू भाषा-साहित्यक सम्यक् ज्ञान अनिवार्य।

सुमनक पत्रकारिता -यमुनामे डूब देलापर पता चलैछ जे ओ मैथिली पत्रकारिताक पिते छलाह। मैथिली पत्रकारिता शुरू भेल 1905 मे। हिनक जन्म भेलनि 10 अक्टूबर 1910मे (आचार्य अपन जन्म तिथि यैह कहैत छलाह, ओना सर्वत्र 9 अक्टूबर 1910 स्थापित अछि), मुदा हस्तलिखित पत्रिकाक सम्पादन ओ प्रकाशनसँ अपन पत्रकारिताक सुभारम्भ कैनिहार ओ 1935मे 'मिथिला-मिहिर' पत्रिकाक सम्पादक भऽ दरभंगा अयनिहार आचार्य सुमन जतय मैथिली दैनिक 'स्वदेश' क प्रकाशन कयलनि ओतहि पत्रकें सर्वजनस्पर्शी बनयबाक दिशामे हिनक जे योगदान भेल ओ मैथिली भाषा-साहित्यक विकास-यात्रामे नव अध्याय जोड़लक। नव दिशा देलक। नवीन बाटपर नव उत्साहक संग दौड़ौलक। अखुनका समयमे पत्रकारिता 'मिसन' नहि रहि गेल अछि, ओ 'कमीशन' पर आधारित भऽ गेल अछि। अपवादकेँ छोड़ि मैथिली पत्रकारिताक 'मिसन' साहित्य ओ भाषा सेवा मात्र रहलैक। सामान्य जनजीवनसँ जुड़बाक कहियो चेष्टा नहि कयलक। तेँ जनसाधारण ओ समाजक नजरिमे मैथिली पत्र-पत्रिकासँ जुड़ल लोक 'पत्रकार' नहि भऽ सकल। पत्रकारक रूपमे समाज ओकरा मोजर नहि देलक। सम्पादकीय केर बदला 'सम्पादकीय' शीर्षकसँ 'पाठकक नाम पत्र' लिखनिहारकेँ अथवा जे रचना भेटल तकरा एकत्र कऽ छापि देनिहारक नाम भने संपादकक स्थानपर छपि जाउन, आम जनता हुनका संकलयिता टा बुझलक। आचार्य सुमन एकर अपवाद छलाह तेँ जनसाधारणमे 'सम्पादकजी' नामे ख्यात भेलाह। पत्रकारिताक दृष्टि रहनि तेँ अखनो पत्रकार समुदायमे समादृत छथि। हुनक लिखल सम्पादकीय केर ऐतिहासिक महत्त्व छैक। आचार्य सुमनसँ पूर्व मैथिलीमे बहुत रास सम्पादक भऽ चुकल छथि। बहुत रास पत्रिको प्रकाशित भेल। मैथिलीक प्रथम पत्रिका 'मैथिल हित साधन' क प्रकाशन कऽ एकर बीज वपन कयनिहारक महत्त्व ककरोसँ न्यून नहि। अद्यावधि प्रकाशित भऽ रहल पत्रिकाक महत्त्व वा ओकर भाषा-साहित्य सेवा ककरोसँ झूस नहि, मुदा सुमनक संपादनक घीचल गेल रेखाकेँ क्यौ टपि नहि सकल अछि। हिनका बाद सम्पादकजीक गौरवपूर्ण संबोधन पौनिहार सुधांशु शेखर चौधरी मात्र भेलाह जे मैथिली पत्रकारक दोसर कड़ी छलाह।

साहित्य-गंगा ओ पत्रकारिता-यमुनामे मिझरायल आचार्य सुमनक राजनीति-सरस्वतीक प्रवाह सेहो मुखर रहल। नगरपालिकासँ लऽ विधान सभा ओ लोकसभा धरिक यात्रा एकर प्रमाण थिक। राजनीतिक क्षेत्रमे हिनक महत्व एहीसँ स्पष्ट अछि जे ई दक्षिणपंथी दलकेर अभिभावक तुल्य छलाह। हिनक समाजसेवाक घाट बेस चाकर-चौरस छल। से एहि कारणे जे ओ स्वयं सेवामे विश्वास रखैत छलाह। ई तथ्य राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघसँ हिनक सम्बद्धता सँ स्पष्ट होइछ। जनमानसमे आदरभाव पौनिहार सुमन प्रायः सभ राजनीतिक दल ओ सामाजिक-साहित्यिक शीर्ष पर विराजमान लोकक आदरणीय रहलाह। सैकड़ो पोथीक भूमिका लेखक, कर्मकांडोद्धारक, पत्रकार, सम्पादक, प्राध्यापक, पूर्व सांसद-विधायक, प्रखर राष्ट्रवादी, उदार चेता, अक्षर पुरुष आचार्य सुमनक नामसँ वर्त्तमान युगकेँ जानल-चीन्हल जायत। मूल, अनुवाद ओ सम्पादन मिला कऽ लगभग एक सय प्रकाशित ग्रन्थ पर अंकित-टंकित सुमनक नाम यावत चन्द्र दिवाकरौ हुनका अमरता प्रदान करैत रहत आ मातृभूमि मिथिलाक संग मिथिलाके" सुमने जकाँ भारतक लघु प्रतिमा माननिहारक गौरव-गढ़-केन्द्र बनल रहत।

मिथिलापर एक दृष्टि

- आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'

आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' द्वारा 1936 इ. मे सम्पादित मिथिला-मिहिरक विशेषांक 'मिथिलाङ्क' मे 'सम्पादकीय मन्तव्य' कहि पृष्ठ 191-192 पर प्रकाशित एहि आलेखमे मातृभूमि मिथिलाक प्रति सम्पादकक दृष्टिकोण ओ प्राचीन गौरवगाथाक प्रति आकर्षणक सहज परिचय भेटैछ -अ.सं.

हिन्दुस्तानक मानचित्र जँ कोनो मूर्त्तिक रूपमे परिणत कयल जाय; कवीन्द्र रवीन्द्रक शब्दमे 'भुवन मनमोहिनी' भूमिकेँ 'सिन्धु धौत्त चरण तल' आ 'शुभ्रतुषार किरीटिनी'क साजमे सजौल जाय, तँ विश्ववन्द्य हमर चिरन्तन भारत जननीक दृष्टिक स्थान कोन 'खण्ड' केँ भेटत ?

भारतीय सभ्यता- जे विश्वक अन्यान्य सभ्यताक जननी अथवा सभक वयोवृद्ध उपदेशिका कहल जाइत अछि, ओकर दर्शन, साहित्य, स्थापत्य, संगीत, चित्रकला आदि जतेक अंग अछि, ओकरा जँ भारतक अंगभूत जनपद सभमे ओकर अपन विशेषताक अनुरूप विभाजित कयल जाय; तँ 'दर्शन'क स्थान कोन जनपद प्राप्त करत ? हिन्दू संस्कृतिक विकास कालसँ किछु दिन पूर्व धरि अध्यात्मिकताक लगाम थामि कऽ युग-वाजिकेँ जे मष्तिष्क अभ्रान्त पथपर चलौलनि, जिनक वाणी कोटि-कोटि जिज्ञासु कण्ठक संगीत बनल, ओहि दिग्गज विद्वान लोकनिक- चरम कोटिक दार्शनिक लोकनिकेर माय कहयबाक गौरव, जाहि नापल- तौलल किछु योजनक भूमिकेँ भेटल, ओ अछि के ? अहाँ ओकरा मिथिला नामसँ स्मरण करी आ मिथि महाराजक संग एकर इतिहास जोड़ी, अथवा 'विदेह भूमि कहि कऽ विदेह जनकक प्रेमिल भूमि कही', अथवा 'तीरहुत' नामसँ सोर करी आ एकर तीरपर होयवला पूर्वज ऋषिगणक यज्ञहवनक स्मरण देयाबी । ई वैह हिमालयक शीतल छाँहमे गंगाम्बु चुम्बित मिथिला होयत ।



सुरेन्द्र झा 'सुमन'
मिथिलामिहिर-सम्पादक

मिथिला - ई नाम सुनिते मोन पड़ैत अछि- आदि युगक ओ दलदल भूमि, जे यज्ञाग्निक द्वारा ठोस बनौल गेल छल ! ओ स्वर्ग भूमि, जहाँ सीता ऊपजा जकाँ आयलि छलीह ! ओ राजसभा, जयत योगी शुक मिथिलेशक द्वारपालसँ आध्यात्मिक प्रश्नोत्तर कऽ रहलाह अछि ! ओ युग, जखन मांस विक्रयी व्याध, क्रोधभ्रष्ट तपस्वीकेँ कर्म आ त्यागक मर्म पढ़ा रहल अछि, ओ खोपड़ी जतय शुक शुकी 'स्वतः प्रमाण परतः प्रमाण' केर रट लगा रहल अछि । मिथिलासँ गण्डकी आ कोशिकीक अन्तरालक मृन्मयी भौतिक रूपेक नहि, ओहि संस्कृतिक झाँकी भेटैत अछि जाहिसँ ई आर्य्यावर्त आइ धरि अनुप्राणित अछि । काशी आ मिथिला दुनू आदिकालेसँ हिन्दूक ज्ञानक पियास मिझयबामे पूरा भाग लेलक अछि । उपनिषद् मे 'काशि विदेहेषु' ठाम-ठाम ज्ञानभूमिक रूपमे उद्धृत अछि । जाहि तरहेँ राजस्थान आ पंजाबक हटि जयबासँ भारतक भुजा कटि सकैछ; बंगालकेँ फराक कऽ देने वाणीक संगीत लुटि सकैछ, ओही तरहेँ जँ हम मिथिलाकेँ भारतसँ सर्वथा फराक कऽ दी तँ प्रत्यक्षतः भारत सन विशाल भूखण्डमे कोनो तेहन वाह्य अन्तर तँ नहि आओत, मुदा एकर अन्तः स्वरूपमे तेहन आघात पहुँचत जकरा सोचबाक साहसो नहि होइछ !

राजर्षि विदेह जनकक अभावसँ ब्राह्मणकालक सम्पूर्ण गौरव लुटि जाइत अछि ! राजसमे सात्विक भावक सम्मिश्रण करयवला ओहन राजर्षि कोनो युगमे नहि जन्म लेलक । 'कर्मण्येव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः' क उदाहरण गीताकेँ तकनहुँ नहि भेटितैक । गोतम, जे न्याय-सूत्रक प्रणयन कयलनि, नहि रहितथि तँ न्याय दर्शन बिनु भारतीय-दर्शन नाँङर भऽ जाइत । महर्षि याज्ञवल्क्य, जे शुक्ल्यजुर्वेदक स्मर्ता भेलाह, हुनका छोड़ि दी तँ 'ईशावास्यं' केर 'ज्ञान काण्ड' केँ सिखौनिहार पवित्र ऋचासभ आइ दुर्लभ होइत ।

सती सीमान्तिनी सीता, जिनक पति-प्रवणताक तुलना कोनो युगक- कोनो भुवनक नारी नहि कयलक, आइ हुनका बिनु नारीत्वक चरम आदर्श संसार नहि सीखि सकैछ । तपस्विनी उर्मिला, मनस्विनी माण्डवी आ श्रुतिकीर्त्ति सन देवी लोकनिकेँ हम नहि पबितहुँ । गार्गी-मैत्रेयी सन ब्रह्मवादिनी महिलासँ सेहो संसार वञ्चित रहि जाइत ।

पुरना युगक बातकेँ छोड़ि दी । एम्हरो भारतक

साहित्य ओ दर्शनक इतिहास मिथिलाक बिना नीपल-पोतल रहि जायत । आचार्य उदयनक कुसुमाञ्जलि, वाचस्पतिक दर्शन-भाष्य आ मण्डनक मीमांसा ग्रन्थसँ रिक्त रहि कऽ, गंगेश उपाध्यायक न्याय-निबन्धकेँ हेरा कऽ भारतीय दर्शन शास्त्र पूर्ण नहि भऽ पबैत ! कर्कश तर्क विद्याक बातसँ मुड़ि कऽ जँ कोमल काव्यकल्पने दिस देखी तँ प्रसन्नराघवकार पक्षधर, आर्याशप्तशती रचयिता गोवर्धन, गर्वपूर्ण मुरारि, रससिद्ध भानुनाथ सन सहित्य-महारथी लोकनिक बिना संस्कृत-साहित्यक गम्भीर क्षति होइत । मैथिल कोकिलक काकली 'अंग'-'बंग'-'कलिंग' मे 'मगध'-धाम आ 'व्रज'- निकुञ्जमे बसन्त नहि बसि सकैत !

★★★

एकबेर हम नीचाँ दिस उतरि अबैत छी आ प्राचीन मिथिलासँ नवीन मिथिला दिस दृष्टि निक्षेप करैत छी तँ बड़ अन्तर देखि पड़ैत अछि । महाकवि भवभूतिक ई पद्य मोन पड़ैत अछि-

"पुरा यत्र स्त्रोतः पुलिनमधुना तत्र सरितां
विपर्यासो जातो घनविरलभावैः क्षितिरुहाम् ।
बहोर्दृष्टं कालादपरमिव मन्ये वनमिदं
निवेशः शैलानां तदिदमिति बुद्धिं द्रढयति ॥"

प्राचीन तपोभूमि मिथिला आइ प्रदूषित हवामे साँस लऽ रहल अछि । ओकर गौरवक स्तम्भ खण्हर सन बनि रहल अछि । आ ई 'ओ' नहि बूझि पड़ैछ । हँ, किछु विभूति एखनो ओ पुरातन झलक देखा जाइत छथि, जाहिसँ हम एकरा मात्र चीन्हि सकैत छी । अनु.- शेखर कश्यप

किए छोड़ल मिथिला

-रूक्मिणी कुमारी

हे सुमन किए छोड़ल मिथिला
अपनेकेर अंतसमे जे छल-राष्ट्रप्रेम
ओ छल जननीकेर लेल हेम
होमि देल निज जीवन
धरतीकेर चरणमे
नित्य पसारल सत्य-सुंगधित
मिथिल आङनमे
कखनो नहि माँङल जननीसँ
किछुओ कहियो
सदिखन देबालय उद्यत रहै छलहुँ
चोखगर कलमक धार कटै छल
जननीकेर संताप

हे कवि सुरेन्द्र !

- डा० सकलदेव शर्मा

मिथिलाकेर
मन-प्राण बीच तोँ 'सुमन'
तोहरे मन आ प्राण बीचमे मिथिला !
तोहर निधनसँ भेलै निर्धन
हे कवि सुरेन्द्र
ई नित्यमंगला मिथिला !
हाथक कंगना लय अयना की,
ज्ञानी लय फारसि बयना की ?
साक्षी अछि संसद
जखने तोँ मुँह खोलह
तोहरा धमनीकेर रक्त बीचसँ
बाजि उठै छल राष्ट्रवाद !
नापि-तौलि कऽ बजबाकेर अभ्यासी,
हे मधु-मितभाषी,
अधर-नयनपर,
मोन-प्राणमे
सदा विराजित प्रेम !
सत्य-अहिंसा सादगीक संग सहनशीलता
करुणा-मानवताकेर अति विरल
तरल अणुक तोँ सृजन
प्रायः तोरेमे बापूकेँ
बचा छला रखने विधि-रचना !
हे निर्मल
हे निष्कलुष,
हे सर्वसमादृत साहित्य पुरुष,
तोहरा अन्तसमे
तीर्थराजकेर जे अलौकिक माधुर्य
संगम सरिता
भगवती भारती सरस्वती कविताकेर
छल पावन शीतलता
हम करैत छी, शत-शत ओकरा आइ प्रणाम !

बहुआयामी व्यक्तित्वक धनी कर्मकाण्डोद्धारक सुमन

–श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

आइ श्री विहीन सुमनजीक नाम लिखैत हाथ तँ पहिनेसँ कपिते अछि आत्मा सेहो कापि उठल । मिथिलाक संस्कृतिकमे श्री विहीन नाम लिखले सँ स्वर्गीयक बोध होइत छलैक, तेँ दिवंगत व्यक्तिक नामक संग स्व० लिखबाक परम्परा नहि रहैक । अस्तु !

सुमनजीक व्यक्तित्वक चर्चाक क्रममे बहुआयामी विशेषणक प्रयोग सब करैत छथिन, जे सर्वथा उपयुक्तो अछि । ओहि बहुआयाममे एक आयाम हुनक छलनि संस्कृत भाषा ओ मिथिलाक कर्मकाण्डक दिनानुदिन होइत ह्रासक चिन्ता । एहि दिस जे हुनक कर्त्तव्य छनि, ताहि दिस प्राय: लोकक ध्यान नहि जाइत छैक ।

महामहोपाध्याय परमेश्वर झाकेँ कर्मकाण्डोद्धारक उपाधिसँ विभूषित कयल गेल छलनि । हमरा जनैत हुनका बाद सुमनेजीक ध्यान एहि दिस आकृष्ट भेलनि । एहि दिशामे हिनका द्वारा कयल गेल प्रयासपर दृष्टि देलासँ हमरा मतेँ ईहो कर्मकाण्डोद्धारक उपाधिसँ विभूषित होयबाक अर्हता रखैत छथि ।

श्री अमरक संग आचार्य सुमन

यद्यपि हिनक सम्पूर्ण परिवार वैष्णव सम्प्रदायमे दीक्षित छथिन, किन्तु मिथिला तँ पञ्चदेवोपासक रहल अछि । कलियुगमे विशेषत: 'कलौचण्डी महेश्वरौ' कहि शक्ति आ शिवक उपासनापर बेसी जोर देल गेल छैक ! सुमनजी दुर्गा सप्तशतीक अनुवाद नहि कऽ सप्तशतीमे वर्णित कथानकके संक्षिप्त रूपमे चण्डीचर्या नामसँ मैथिलीमे पद्यबद्ध उपस्थित करबे कयलनि संगहि प्रतिवर्ष शारदीय नवरात्रसँ पूर्व दुर्गा सप्तशतीक गुटका संस्करण प्रकाशित कऽ अल्पमूल्यमे समाजकेँ उपलब्ध करबैत रहलाह तथा भगवतीक प्रसिद्ध स्तोत्र सभक मूलक संग पद्यमय अनुवाद कऽ 'शक्तिस्तव'' नामसँ प्रकाशित कयलनि । तहिना पुष्पदन्त विरचि 'शिवमहिमा स्तोत्र' केँ मैथिली अनुवाद सहित प्रकाशित करबे कयलनि, शिव पंचाक्षर स्तुति जे स्वयं लिखलनि से चमत्कारमे शंकराचार्य विरचित शिव पंचाक्षर स्तोत्रहुसँ विशिष्ट छनि । स्वयं वैष्णव छलाह तेँ विष्णुक स्तोत्रक अनुवाद ''हरिस्मरणिका'' नाम सँ प्रकाशित कयलनि।

सम्प्रति उपनयन संस्कार समाजमे कोन प्रकारेँ भऽ रहल अछि से सर्वविदिते अछि । जे किछु होइतो अछि ताहूमे माणवक (बरूआ) केँ सन्ध्या वन्दन तँ दूर सरिया कऽ गायत्री सावित्री मन्त्रोधरि नहि सिखाओल जाइत छनि । हमरा देखल अछि जे कोनो अभिभावक सन्ध्यावन्दन विधिक पुस्तकक अनुपलब्धताक चर्चा कयलथिन तँ सुमनजी संक्षिप्त सदाचार शास्त्र, जे हिनक पिता संकलित कयने छलथिन अपना प्रेससँ प्रकाशित कऽ उपलब्ध करा देलथिन, जाहिमे प्रात: स्मरणसँ लऽ विश्वेदेव बलि विधि, गोसाँइ नाम पर्यन्त संकलित अछि ।

हिन्दु सभक हेतु कोनो एहन मास नहि जाहिमे कोनो ने कोनो धार्मिक अनुष्ठान नहि होइत हो । सुमनजी गृहस्थोपयुक्त मैथिल सम्प्रदायानुसार समस्त कृत्य यथा मासकृत्य, व्रत-पूजा-कथा पद्धति, गृहस्थ कुलाचारकृत्य, तीर्थकृत्य, दान ओ संकल्प वाक्य, नित्य नैमित्तिक काम्य क्रियाकलाप, एवं धर्मशास्त्रीय विधि-निषेध ओ ज्योतिष व्यवहार आदि संकलित कऽ वर्ष कृत्यक सम्पादन कऽ समाजकेँ सुलभ करा देलनि ।

एक दिस पत्रकारिता, दोसर दिस मौलिक ग्रन्थक प्रणयन, तेसर दिस विशाल अनुवाद कार्य, चारिम दिस अध्यापन आ एहि सभक संग राजनीतिक सामाजिक कार्यक व्यस्तता रहितो सुमनजीक ध्यान कर्मकाण्डक होइत ह्रासपर एतेक दूर धरि रहैत छलनि जे पंचांगक गुटका संस्करण पर्यन्त प्रकाशित कऽ समाजकेँ कर्मकाण्डसँ विमुख नहि होअऽ देबा लेल सतत तत्पर रहैत छलाह । अत: हिनका आजुक युगक कर्मकाण्डोद्धारक कहल जायत से अत्युक्ति नहि होयत ।

एक स्वर्णिम युगक अवसान

- डॉ० सुरेश्वर झा

5 फरवरी 2002 कें साढ़े एगारह बजे रातिमे मिथिलाक एकगोट गौरवशाली परम्पराक अवसान (?) तथा एक स्वर्णिय-युगक अन्त तखन भऽ गेलैक, जखन एहि भूमिक मैथिलीक साहित्यकार आ संस्कृतक विलक्षण विद्वान पं० आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' अपन अनन्त यात्रा पर विदा भऽ गेलाह । बेरानवे वर्षक अवस्था रहितो हुनक साहित्यिक गतिविधि रूकल नहि छलनि । हमरालोकनि हुनक शतवार्षिकी समारोह हुनका समक्ष आयोजित करबाक आशा एवं आकांक्षा रखने छलहुँ ।

कहियो राष्ट्रकवि दिनकर तिरुपति बालाजीक समक्ष मङने छलथिन जे हुनक जे किछु जीवन बचल होनि से जयप्रकाश कें दऽ देथि । बालाजी हुनक प्रार्थना स्वीकृत कऽ लेलथिन। ओही दिन सन्ध्याक समय मद्रासक मेटिनो बीच (समुद्रक कात) मे जयप्रकाशजी आ बाबू गंगाशरण सिंहक समक्ष दिनकरजी कविता पाठ कयलनि आ प्रातः काले हुनक निधन मद्रासेमे भऽ गेलनि । ओही तरहें गत दू बेर 'सुमन'जी क जयंतीपर हम बाजल छलहुँ जे एहिठाम उपस्थित सभ गोटेक जीवनसँ एक-एक वर्ष काटि बालाजी सुमनजीक आयुमे जोड़ि देथु, मुदा हमर निवेदन बालाजी नहि सुनलनि ।



अभिनन्दन ग्रंथ समर्पित करैत यात्री
बीचमे डा० सुरेश्वर झा

मैथिली साहित्यमे 'सुमन'जीक जे अनुपम अवदान छनि, मैथिली भाषाक उन्नतिक लेल जे संघर्षक कथा छनि, मैथिली पत्रकारिताक हेतु जे पुरुषार्थ छलनि, राजनैतिक, समाजिक एवं सांस्कृतिक विकास कार्यक लेल जे कार्य छनि, देश भरिमे अपन महान व्यक्तित्वक लेल जे ख्याति अर्जित कयल छनि, मैथिली भाषाकें संविधानक अष्टम सूचीमे सम्मिलित करबाक लेल जे व्यथा छलनि, दुख आ सुख दुनू स्थितिमे स्थितप्रज्ञ रहबाक जे सामर्थ्य छलनि, सभ दिन अजातशत्रु बनल रहबाक जे क्षमता छलनि, अपन दल ओ सिद्धांतक प्रति जे अपार निष्ठा छलनि तथा अपना लगमे रहिनहार छोटसँ छोट साहित्यकार, राजनैतिक कार्यकर्त्ता एवं समाजसेवीकें आगू बढ़ेबाक जे उत्कंठा छलनि, ताहि सभपर बहुत किछु विगत समयमे लिखल आ बाजल गेल अछि । भविष्योमे ओकरा रेखांकित कएल जायत, मुदा तैयो ओहि महामानवक महाप्रवासक अवसरपर शब्द ओ वाक्यकें ताकि किछु लिखबाक लोभकें छोड़ब कठिन ।

सुमनजीमे जतेक गुण छलनि, जतेक क्षमता छलनि, जतेकटा विराट हुनक व्यक्तित्व छलनि तकर उपमा दोसर ठाम नहि भेटि रहल अछि । क्यौ बहुत पैघ साहित्यकार भेलाह, परञ्च हुनक मनुष्यता ओतबे विशाल हैत से सम्भव नहि । क्यौ पैघ राजनेता, किंवा विद्वान छथि, मुदा ओ चिक्कन आ फरिच्छ चरित्रवला हेताह से विरले भेटताह । किनको नाम ओ ख्याति बहुत छनि मुदा हृदय आ मनसँ ओतबे पैघ हेताह से संभव नहि, सुमनजी मे ई सभटा छलनि, आ छलनि एक गोट असंभव क्षमता । क्यौ प्रशंसा करय अथवा आलोचना दुनूमे एके रंग । मुखाकृति पर सदति सहज मुसकान आ अपन बातकें रखबामे प्रखरता । तामस आ अद्विग्नता कैं अपना लगमे कखनहुँ नहि आबय दी- ई दोसर ठाम हम जीवन भरि नहि देखलियैक। अपन बड़ाइ अथवा अपना द्वारा कयल गेल उपकारक चर्चा कहियो नहि कयलनि। जहिया हमरा केन्द्रीय साहित्य अकादेमीमे (1992 इ. क दिसम्बरमे) सदस्य मनोनीत कऽ आयल छलाह, तहिया हमरा कहलनि जे हम तँ विचारिकय गेल छलहुँ जे अपना बाद एहिबेर अमरजीकें अकादेमीक सदस्य बना देबनि, मुदा हुनक नाम 'पैनेल' मे नहि छलनि तखन जे अन्य नाम छलैक ताहिमे सभसँ उपयुक्त अहाँ छलहुँ तें अहाँकें बनौलहुँ । दोसर रहितथि तँ एना नहि कहितथि । सत्य ओ स्पष्ट भाषणक एहिसँ दोसर उदाहरण ताकब कठिन अछि ।

सुमनजीकें हमरा पर अत्यधिक स्नेह रहैत छलनि, - एहि लेल नहि जे हम कोनो पैघ विद्वान ओ लेखक छी; मात्र एहिलेल जे हम मैथिली भाषा-साहित्यक कार्य ओ संघर्षमे सक्रिय रहैत छी । सुमनजीकें अन्तिम समयमे दू गोट कचोट रहि गेलनि । प्रथम तँ ई जे ओ अपना जीबैत मैथिली भाषाकें संविधानक अष्टम सूचीमे सम्मिलित नहि देखि सकलाह आ दोसर जे अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद् सक्रिय

नहि भऽ सकल । अधिक काल कहैत छलाह जे कहुना परिषदकेँ सक्रिय बनेबाक चेष्टा करू । ओ ऐतिहासिक संस्था थिक ।

सुमनजीक साहित्यक सम्बन्धमे एक गोट महत्वपूर्ण कार्य सेहो बाँकी रहि गेल छनि । हुनका लगमे रहनिहार लेखक लोकनि जे हुनकासँ बहुत अधिक प्रतिष्ठा आ स्थान समाज ओ साहित्यमे प्राप्त कयलनि से हुनक ई कार्य नहि कऽ सकलथिन- हुनकर साहित्यिक कृतिक हिन्दी ओ अंगरेजीमे अनुवाद कऽ राष्ट्रीय दैनिक पत्रमे जँ व्यापक रूपमे प्रकाशित भेल रहितन तँ आइ राष्ट्रीय स्तरपर हुनक साहित्य पसरल रहैत आओर ओहिसँ मैथिली भाषा ओ साहित्यक बहुत पैघ सेवा भेल रहितैक । ई अभाव साहित्य अकादेमीक सदस्य भेलापर आ भारतक बाइस गोट भाषाक साहित्यकारक बीचमे बैसलापर अधिक स्पष्ट होइत रहल । एहि अभावक कारणेँ जखन साहित्य अकादेमीकेँ 'सार्क' देशक भाषाक कविताक एक गोट संग्रह प्रकाशित करबाक भार भेटलैक तँ हमरा एकोगोट मैथिली कविताक अंगरेजी अनुवाद पठेबाक लेल नहि कहल गेल । जतय डोगरी सन भाषाक कवयित्री पद्मा सचदेवक कविताक अंगरेजी अनुवाद ओहि संग्रहमे छपलनि ततय सुमनजी सन रससिद्ध कविक कविता ओहिमे सम्मिलित नहि भऽ सकलनि । हमरा हृदयपर ओकर पैघ चोट लागल । तेँ ई कार्य सेहो होयबाक चाही आ सुमनजीक 'पयस्विनी', 'प्रतिपदा', 'उत्तरा' आ 'साओन-भादव सन उच्चकोटिक कृति आ अन्य कविताक हिन्दी एवं अंगरेजी अनुवाद एहि दुनू भाषाक राष्ट्रीय दैनिक ओ उच्चस्तरीय साहित्यिक पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित करेबाक कार्य कयल जाय ।

महाकाव्य, खण्डकाव्य, मौलिक मुक्तक काव्य, काव्य-कृतिक अनुवाद, आलोचना-ग्रन्थ, उपन्यास, संकलन, संस्कृतमे कृति तथा असंख्य भूमिकाक लेखक ओ कवि आचार्य सुरेन्द्र झा सुमनक जन्म समस्तीपुर जिलाक बल्लीपुर गाममे 9 अक्टूबर 1910 इ. केँ भेल छलनि । सुमनजीक शिक्षा पश्चिममे मुजफ्फरपुर सँ वाराणसी तक आ पूबमे कोइलखसँ कलकत्ता धरि भेलनि । सुमनजी ने मात्र सभ परीक्षामे प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान प्राप्त कयलनि, अपितु विभिन्न स्थानक संस्कृति आ विभिन्न विद्वानक विद्वताकेँ सेहो गंभीर रूपेँ आत्मसात कयलनि । हिनक अपन समकालीन संगी-साथी लोकनिमे दोसर ककरो ई सौभाग्य प्राप्त नहि भेलनि । सुमनजीकेँ 1930इ. मे बंगालक काव्यतीर्थ परीक्षा तथा 1932 इ. मे 'बिहार-उड़ीसा संस्कृत एसोसियेशन'क साहित्याचार्य परीक्षामे प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान प्राप्त भेलनि ।

सुमनजीक 1953 इ.मे सी.एम. कॉलेजमे मैथिली विभागमे व्याख्याताक रूपमे नियुक्ति भेलनि, 1969 इ. मे ओहि विभागक अध्यक्ष बनलाह, 1973 इ.मे 'रीडर' मे प्रोन्नतिक उपरान्त ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालयक स्नात्कोत्तर मैथिली विभागक विभागध्यक्ष पद प्राप्त कयलनि आ 1975 इ. मे सेवानिवृत्त भऽ गेलाह ।

राजनीतिक क्रिया-कलापमे सेहो सुमनजी सक्रिय रहलाह । बेयालिसक 'भारत-छोड़' क्रांतिमे सुमनजी देशक विख्यात स्वतंत्रता सेनानी तथा समाजवादी नेता रामनन्दन मिश्रक सहयोगी रहि भूमिगत रूपमे देशक स्वतंत्रता-आंदोलनसँ जुड़ल छलाह । जनसंघ, जनता पार्टी ओ भारतीय जनता पार्टीक संस्थापक सदस्यक रूपमे ओहि दल सबहिमे अत्यन्त प्रभावशाली ओ कर्मठ बनल रहलाह । जीवनक अन्तिम क्षण धरि भारतीय जनता पार्टीक निष्ठावान नेताक रूपमे चर्चित ओ अर्चित छलाह । प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी आंतरिक श्रद्धाक दृष्टिसँ सुमनजीकेँ देखैत छलथिन । सुमनजीक शरीर आ मनक पोरपोर राष्ट्रीयता ओ देश प्रेमसँ भरल छलनि । मैथिली महाकाव्य 'दत्तवती' हुनक राष्ट्रीय भावनाक प्रमाण प्रस्तुत करैत अछि । जहिना विद्यापति जीवनक अन्तिम अवस्थामे राजनीतिक ग्रन्थ 'विभागसार' लिखलनि तथा सप्तरत्नाकार चण्डेश्वर अपन अस्सीवर्षक आयुमे राजीनतिक ग्रन्थ **'राजनीति रत्नाकार'** लिखलनि, तहिना 'सुमनजीक जीवनक अन्तिम समयक जे दू गोट पोथी लिखल छनि से थिक राजनीतिपर **'प्राचेतस राजशास्त्र'** ओ दोसर छनि अपन संस्मरणात्मक आत्मकथा 'मन पड़ैत अछि' ।

सुमनजी 1972 इ. मे बिहार विधान सभाक चुनाव आओर 1977 इ.मे लोकसभा चुनाव जीतिकऽ विधायक ओ सांसद बनलाह । ओहीक्रममे 1973 मे बिहार सरकारक संस्कृति सुधार आयोगक आ 1977-79 मे संसदीय राष्ट्रभाषा परिषद् एवं संसदीय केन्द्रीय शिक्षा, संस्कृति तथा समाज कल्याण सलाहकार समिति, नई-दिल्लीक सदस्य बनलाह ।

जहाँ धरि साहित्यिक संस्थाक सम्बन्ध अछि, ओहिमे सुमनजी अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद् दरभंगाक अध्यक्ष (1973 सँ 1988 धरि) पन्द्रह वर्ष रहलाह । दरभंगाक वैदेही समिति आ विद्यापति सेवा संस्थानक अध्यक्ष रहलाह । केन्द्रीय साहित्य अकादेमीक साधारण-सभा एवं कार्यकारी परिषद्क सदस्य तथा मैथिली भाषा सलाहकार समितिक संयोजक (1983 सँ 1992 इ. धरि) रहलाह । कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक अभिषद्क सदस्य (1975 सँ 1982 धरि) तथा ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालयक अभिषद् सदस्य रूपमे (1978 सँ 1980 धरि) कार्य कयलनि ।

सुमनजी जतय कतहु सदस्य अथवा पदाधिकारी रहलाह, हिनक विचार ओ निर्णय सर्वोपरि मानल जाइत छलनि । केन्द्रीय साहित्य अकादेमीमे एतेक लोकप्रिय छलाह जे ओतय आदेशपालसँ लऽकऽ अध्यक्ष धरि हिनक धाख रखैत छलथिन ओ श्रद्धा करैत छलथिन ।

पुरस्कार, सम्मान ओ परितोषिकक तँ हिनका जीवनमे पथार लागल छनि । सभक नामक उल्लेख संभव नहि अछि। मुदा हिनक काव्य पुस्तक 'पदास्विनी' पर 1971 इ. मे साहित्य आकदेमीक मूल रचनापर 'एवार्ड' तथा 1995 इ. मे रवीन्द्र नाटकावली-भाग-1 पर अनुवाद पुरस्कारक उल्लेख करब आवश्यक अछि । एकर अतिरिक्त 1982 क मैथिली अकादमीक विद्यापति पुरस्कार तथा 1979 इ. क चेतना समितिक पुरस्कार सेहो उल्लेखनीय अछि ।

सुमनजी जे सम्पादकजी नामसँ विख्यात छलाह, हुनका 'स्वदेश' मासिक ओ दैनिक पत्र, वैदेही मासिक, बीस वर्ष धरि साप्ताहिक 'मिथिला मिहिर', मैथिली अकादमी पत्रिका आदिक सम्पादन करबाक प्रतिष्ठा प्राप्त छलनि ।

सुमनजीक साहित्यिक कृतिमे दू गोट अन्तर्धारा बहैत रहलनि; पहिल छलनि संस्कृत आधारित क्लासिकीय परम्पराक तेहेन विविधापूर्ण पौराणिक संरचनाक धारा जाहिसँ स्व० प्रो0 जयदेव मिश्र हिनका कविलोकनिक 'कवि' कहलथिन तथा दोसर छलनि पत्रकारिताक धारा जाहिसँ ई 'सम्पादकजी' क नामसँ विख्यात भेलाह । आ एही दोसर धारासँ हिनका उपन्यास आ कथा लिखबाक प्रेरणा भेटलनि । हिनक 'वृहस्पतिक शेष' सन उच्चकोटिक कथा एही-परम्पराक परिणाम कहल जा सकैछ । ई मैथिली पत्रकारिताक पिताक रूपमे सर्वमन्य भेलाह । असलमे ई कहब उचित हैत जे 'मिथिला मिहिर' क 'मिथिलांक' विशेषांकक प्रकाशनसँ हिनक मैथिली लेखकक जीवन प्रारंभ होइत अछि । ओहिसँ पूर्व सुमनजी हिन्दीमे 'दिनकर' क संग राष्ट्रीय गीत आ प्रेमचन्दक शैलीमे 'झोपड़ीमें' सन कथा-लेखन मे लागल छलाह ।

सुमनजी सन व्यक्तित्वक जन्म मरबाक लेल नहि होइत छैक । सुमनजी युग-युग धरि मिथिला आ राष्ट्रभरिमे 'अमर' रहताह आ अनन्त कालधरि भावी पीढ़ीक युवक, राजनीतिक कार्यकर्त्ता, कवि ओ लेखक हिनका जीवन ओ कार्यसँ प्रेरणा ग्रहण करैत रहत ।

स्तुति निन्दामे भेद न मानल
रिपु-हित बुझल समाने ।
पटबथि वा काटथि
दूहूके छायासँ सम्माने ।।

केहन करम भेलै

-फूलचन्द्र झा 'प्रवीण'

केहन करम भेलै
सून भवन भेलै
कि आहो रामाऽऽऽ
ककरा लए उपवन
सुमन सजाओल रे की ।।

सुखि गेल डारि-पात
फुजल दुःखक बाट
कोन पापे प्रायश्चित
ई पाओल रे की ।।

वसन्त विलाय गेलै
उषम समाय गेलै
पावस अछैतो
पतझड़ पाओल रे की ।।

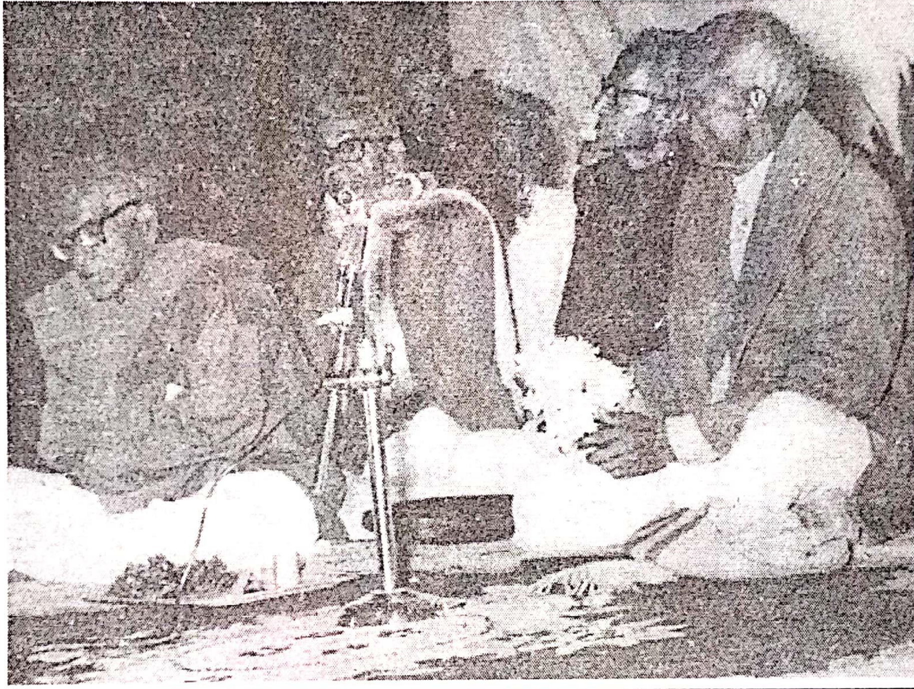
कोइली कानय गाछ
तितली बेकल कात
हीरा जनम हम
व्यर्थ गमाओल रे की ।।

जहिना अमर रवि
तहिना सुमन कवि
साहित्य-साधक
यश जग पाओल रे की ।।

हिमालय-हृदय महाकवि सुमन

- प्रो० शिवाकान्त पाठक

मैथिली साहित्यमे 1906 सँ 11-12 इस्वी धरिक कालखण्ड अत्यन्त महत्वपूर्ण रहल अछि। एहि कालखण्डक अन्तर्गत सुमनजी, मधुपजी, आरसीबाबू, किरणजी आदि कतिपय ऋषि तुल्य साहित्यकार रत्नक आविर्भाव भेल अछि। जाहिमे सभक अपन-अपन शिष्टता-विशिष्टता रहलनि अछि। विहिया कऽ देखब तँ आचार्य प्रवर प. सुरेन्द्र झा 'सुमन'क व्यक्तित्व दहो दिस चतरल-पसरल सघन पल्लवित फूल-फलसँ भरल एकान्त-शान्त साधनारत गाछ जकाँ प्रतीत होयत। सुमनजी साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक जीवनक सभ क्षेत्रमे लगभग समान रूपेँ पूर्ण दृष्टिगत होइत छथि।



साहित्यमहारथी प्रो० हरिमोहन झा, आचार्य प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' आरसी प्रसाद सिंह एवं कांचीनाथ झा 'किरण'

सामाजिक व्यक्तिक रूपमे ई बिना छोट-पैघ, नीच-ऊँच, गोत्र विगोत्रक भेद-भाव कयने समस्त मर्यादाक पालन करैत रहलाह। यज्ञोपवीत हो कि बेटी-बेटाक विवाह आ कि ककरो ओहि ठाम सत्यनारायण भगवानक पूजा सभतरि अपन यथा योग्य उपस्थिति दैत रहलाह।

मोन पड़ैत अछि एक बंगाली युवक श्यामा पद बनर्जी अपन विवाहोपरान्त भगवानक पूजा कयने छल। लहेरियासरायक बेंता महल्लामे, कोनो कारणेँ ओकर पितो ओकरा लेल सामाजिक बहिष्कारक निर्णय कयने छलाह, मुदा ओ अपनाकेँ समाजक संग जोड़बाक लेल आकुल छल। सुमनजी अपन उपस्थितिसँ ओकर सामाजिक बहिष्कारकेँ तोड़ने छलाह। फेरो ककरो साहस नहि भेलैक जे ओकरा बहिष्कृत मानैत वा वहिष्कृत करैत। लोकक धर्रोहि लागि गेलैक। तहिना अति व्यस्त वर्त्तमानक जीवनमे समयकेँ देखैत ओ मैथिलीक नित्य-निमित्त सांस्कृतिक कार्योकेँ समयानुकूल बनौलनि। सन्ध्यावन्दन हो कि श्राद्ध-उपनयनक कार्य, सभक युगानरुप उद्धार कयलनि।

राजनीति सनक क्षेत्रोमे हुनक फराके रंग-ढंग रहलनि। कतौ-क्यो हुनक व्यक्तित्वक विरोधी नहि छल। ओहिना मोन अछि आचार्य प्रवर जनसंघ दलसँ विधानसभाक प्रत्याशी छलाह। तहियो हुनका दलक घोर विरोधी एतबे कहय जे ओ अपने तँ बड़ नीक लोक छथि, हुनक दले हमरा सभक प्रतिकूल पड़ैत अछि। साहित्य तँ हुनक जीवनक मुख्य प्रवाह छल। ओहूठाम ओ अजातशत्रुये छलाह। आलोचको जँ लग जानि तँ ओकरहुँ ओतबे आदरक संग बैसाबथि जतेक अपन प्रशंसककेँ। हुनक एकटा उपन्यास 'उगनाक दायादवाद' छपल छलनि। शब्दार्थ बोधक अभावमे एकगोटे लिखलक जे सुमनजी दायादक स्थानपर देआद कि दियादो तँ लिखि सकैत छलाह। ओ से किएक ने लिखलनि। दियाद कि देयाद शब्दमे गर्भित अर्थक अन्तरकेँ ओ नहि बूझि सकल, मुदा सुमनजीक लेल धन सन। सुमन समान 'शब्द' निर्माता कि शब्दक समुचित प्रयोगकर्त्ता हमरा जनैत वर्त्तमान शताब्दीक संस्कृतेतर भाषामे आन कोनो साहित्यकार नहि भऽ सकलाह अछि। साहित्यमे ओ हिमालय-हृदय महाकवि छलाह जाहिसँ अनेक सुधामयी पयस्विनीक अजस्र धार प्रवाहित भेल अछि।

आब ओ नहि छथि। हुनक साहित्यक अनुशीलन-मननक प्रयोजन छैक से हेतैक ? मैथिल भूत कालमे जीबै छथि। भूतक पूजा करै छथि। जँ वर्त्तमानमे जिबितथि, वर्त्तमानक पूजा करितथि तँ वर्त्तमान ओ भविष्य दूहू अधिकसँ अधिक पुष्पित-फलित होइत।

मिथिलाक महात्मा छलाह सुमनजी

– डा० रत्नेश्वर मिश्र

अभूतपूर्व वैदिक ज्ञान आ संस्कृतिक प्राय: अन्तिम शलाका पुरुष छलाह सुरेन्द्र झा 'सुमन' जनिकर पंचतत्व रचित भौतिक काया 5 मार्च 2002 मंगल दिन सदा सर्वदा लेल शान्त भऽ गेल, मुदा हुनक यश: काया ताधरि जीवित रहत जाधरि मिथिला, मैथिली आ मैथिलक किञ्चितो प्रमाण शेष रहत । आइ हमरा अपन अकिंचनताक बोध भऽ रहल अछि जे कवीन्द्र रवीन्द्र जेना मोहनदास करमचन्द गांधीकेँ महात्मा कहलथिन तऽ समस्त विश्व हुनका महात्मा कहय लागल – गाँधी जकाँ सुमनजी सेहो निस्सन्देह महात्मा छलाह, मुदा ई कहबा लेल आ तकरा सर्वग्राह्य बनयबाक क्षमता रखनिहार कोनो रवीन्द्र जौं मिथिलामे क्यो छलाह तऽ ओ सुमनजी अपनहि आ तेँ ओ अपनाकेँ अपनहि महात्मा कोना कहितथि ।

साहित्यमे हमर कोनो गति नहि अछि आ तेँ हुनकर बहुविध साहित्यिक उपलब्धिक विवेचन-विश्लेषण हम नहि कऽ सकैत छी, मुदा ई सहज रूपेँ जनैत छी जे सम्प्रति मैथिलीक सभ साहित्यकार आकांक्षी रहैत छलाह हुनकर अनुशंसा-अनुकम्पाक । एक बेर हुनकर संस्तुति भेटि गेलापर कोनो रचनाकारकेँ अपन रचनाक सृजनक समतुल्य आनन्द आ सन्तुष्टि भेटैत रहैक । कतोक साहित्यकार हुनक पारस-स्पर्शसँ साहित्यकार बनलाह । सम्भव मानव छनि जे ओ महान् साहित्यकार छलाह, मुदा हमर अनुभूति अछि जे ओ जतबा पैघ साहित्य निर्माता छलाह ताहूसँ पैघ साहित्यकार-निर्माता छलाह । मैथिलीक पत्रकारिता आ सुमनजी प्राय: समवयस्क कहल जा सकैत छथि- एक जौँ 2005 मे शतायु होयत तऽ ओहो अगिला दशकमे शतायु होइतथि । एहि सय वर्षमे मैथिलीक पत्रकारिता जेना मरि-मरि कऽ जीवित आओर सशक्त होइत रहल अछि तहिना सुमनजी तिल-तिल अपनाकेँ न्यौछावर कऽ मैथिलीक पत्र-पत्रकारिताकेँ जीवित रखबामे संलग्न रहलाह आ जोँ मैथिलीक सर्वाधिक दीर्घजीवी पत्रिका मिथिला मिहिरक ओ प्राय: सर्वाधिक अवधि धरि सम्पादक रहलाह तऽ ओएह मैथिलीक एकमात्र दैनिक पत्र 'स्वदेश'क सम्पादक आ जन्मदाता सेहो छलाह । बीसम शताब्दी अनेक अर्थमे विलक्षण शताब्दी छल- एकर आरंभ जौँ श्वेत किंवा उच्च वर्णक प्रभुताक घोषसँ आरंभ भेल छल तऽ एकर मध्य अबैत-अबैत शोषित दमित किंवा श्याम वर्णक वर्चस्वक स्थापना भेल- आ से भारतेमे नहि समस्त विश्वमे । भारतमे ब्राह्मण, क्षत्रिय आ वैश्यक स्थानपर शूद्रक भूमिका राजनीति आ समाजमे निर्णायक होमय लागल । विश्वस्तरपर जों रुडयर्ड किपलिंगक दंभोक्ति छल जे असभ्य असंस्कृत श्यामवर्णी लोक श्रेष्ठ श्वेत वर्णक भार छल तऽ यूगान्डाक पूर्व अश्वेत शासक इडी अमीन चारि श्वेत लोकक कान्हपर पालकी राखि ओहिमे अपनहि बैसि आदेश कयल जे हँ, हम सभ श्वेतक भार छी । सुमनजी अपन साहित्यमे एहि परिवर्तनकेँ प्रभावी ढंगसँ प्रतिबिम्बित कयलनि । ओ एकदिस जौँ पारम्परिक वर्चस्ववला समाजक कथ्य- तथ्यकेँ अपन रचनाक विषय-वस्तु बनौलनि तऽ दोसर दिस 'उगनाक दायादवाद' लीखि युग सत्यकेँ सेहो अपेक्षित महत्त्व देलनि । सुमनजी राजनेता छलाह । कहल गेल अछि जे राजनीति अधालाह लोकक शरणस्थल अछि, मुदा आइधरि क्यो सुमनजीके सन्त छोड़ि आन कोनो रूपमे सम्बोधन नहि कयल आ से तखन, जखन कि ओ भारतीय जनता पार्टी सन एक विशेष विचारधारा वाला राजनीतिक दलसँ जुड़ल छलाह आ ओहि विचारधारासँ दृढ़तापूर्वक आबद्ध छलाह । हम व्यक्तिगत रूपेँ कोनो विचारधारा सँ जुड़न अधलाह मनैत छी तेँ एहि कारणेँ जे विचारधारारूपी पंक व्यक्तिक स्वतंत्र-चिन्तनकेँ कंठित कऽ दैत छैक मुदा सुरेन्द्र झा प्रभृति कमल-सुमनकेँ कोनो पाँक कहियो लेढ़ाय नहि सकल- प्राय: ओहिना जेना महान् जनकवि यात्री मार्क्सवादी रहितहु अपन धार्मिक-सांस्कृतिक आस्था आ विश्वाससँ कतहु ने कतहु बन्हले रहलाह । राजनीतिमे रहितहु ओ कहियो सत्तावादी नहि भेलाह, जनसामान्यसँ अपन सम्पर्क कहियो नहि बिसरलाह । मैथिल-जीवनमे पंचांगक विशिष्ट महत्त्व छैक आ एकर पंचांग अनेक अर्थमे आन देशीय पंचांगसँ भिन्नो छैक । मैथिल के नित-प्रतिदिन पंचांगेक काज पड़ैत छनि कियैक तऽ जन्म सँ मरण धरि हुनकर प्रत्येक कार्य नक्षत्र-लग्न आदिक विचारसँ प्रभावित रहैत छनि। सुमनजी अनेक वर्ष धरि सर्वसाधारण लेल सुलभ अत्यल्प मूल्य वला पंचांगक निर्माण आ प्रकाशन करैत रहलाह । हमर सौभाग्य रहल जे ओ प्राय: प्रतिवर्ष हमरा एकप्रति आशीर्वाद रूपेँ दैत रहलाह । साहित्यक क्षेत्रमे सुमनजी अपन अनुवाद साहित्य लेल सेहो चर्चित रहलाह । एतय हम हुनक अनुवाद कयल साहित्यक कोनो मूल्यांकन नहि प्रस्तुत कय मात्र एतबे कहय चाहैत छी हुनकर एहि सन्दर्भमे विशिष्ट सोच छलनि । एक समारोहमे हम हुनका

(शेष पृष्ठ 32 पर)

मैथिली मंदिर

- डा० विभूति आनन्द

जतऽ क्यो ऊँच-नीच नहि छलै
जतऽ ने जीत छलै
आ ने तऽ हारि छलै
ओ पुनीत दीठ
मैथिली मंदिर छलै

जतऽ शास्त्रक गान होइत छलै
अनेचोके मे जेना
शुचिताक भान होइत छलै
ओ सिद्धपीठ
मैथिली मंदिर छलै

जतऽ मात्र भाषाक चिन्तन छलै
जतऽ अपन राज्यक लेल
विकल कम्पन छलै
ओ समूह-संगीत
मैथिली मंदिर छलै

मैथिली मानसिकताक
ओ मंदिर भरोस छलै
मैथिली-विपदाक
रोष छलै ओ मंदिर

ओहि मंदिरक हाथ
सकल संततिक माथपर छलै
ओहि मंदिरक बात
मिथिला मे बहैत बसातपर छलै

ओ मंदिर
सहसा वीरान भऽ गेलै
मैथिल-मानस मने
निष्प्राण भऽ गेलै
ओह,
मैथिली मंदिरक देवता
ई की कऽ गेलै !



आचार्य सुमन : एक आकर्षक मुद्रा

अभिनन्दन

साहित्य साधनामे रत, कविहुक कवि, काव्यक मर्मज्ञ ।
भाषाविद्, भण्डार शास्त्रहुक, मति मण्डप मह-यज्ञ ॥
प्रतिभा पुञ्ज, विशिष्ट लेखनी केर चमत्कृत सृष्ट ।
रचना विधा विविध भूषामे कयल अलंकृत तुष्ट ॥
भाषाहित नित त्याग-तपस्या साक्षी रहत 'स्वदेश' ।
हे गुरुवर ! सम्राट कविक छी स्रष्टा रस-सविशेष ॥
अपनेसँ पद होइछ अलंकृत विधिसंगत विन्यास ।
रहब सतत उत्फुल्ल मैथिली वागक हे सुभ न्यास ॥

[प्रस्तुत अभिनन्दन पत्र आचार्य सुमनके 24-2-84 कें 'सांस्कृतिक समिति' मधेपुर द्वारा प्रदान कयल गेल छलनि । एक रचयिता डा० फूलचन्द्र मिश्र 'रमण' थिकाह - अ.सं.]

फहरत निशि दिन कीर्त्ति-पताका

-अमलेन्दु शेखर पाठक

सुमन सु-मनकेर स्वामी छलियै
राष्ट्रवाद-अनुगामी छलियै
मिथिला धरि के कहय
जगत-भरि अपने नामी गामी छलियै

सत्-साहित्यक कामी छलियै
आब बुझय सब दामी छलियै
जीवन करे अंतिम पल रहितो
प्रगतिशील अविरामी छलियै

भू-भाषा ध्वजवाहक छलियै
मानवता-संवाहक छलियै
मिथिलाकेर हे प्रखर मिहिर
अरि-भावलेल तँ दाहक छलियै

राजनीति रथ लायक छलियै
मातृवंदना गायक छलियै
मैथिलीक उत्थान योजनाकेर
अपने युग-नायक छलियै

पत्रकार-संपादक छलियै
ककरोसँ नहि बादक छलियै
कोकनल हो वा सारिल
सबहक अपने कुशल खरादक छलियै

क्यौ अपनेकेर मूर्त्ति लगौता
क्यौ पुस्तक आलय बैसौता
क्यौ पथ कय अपनेकेँ अर्पित
गुण-गरिमाकेर गीत सुनौता

मुदा न भेटत ओ निश्छल छवि
भटकत ताकत अपनेकेँ कवि
अर्चनाक हित सगरो दुनियाँ
वन्दन करते सदिखन नवि-नवि

जाबत हँसतै धरती-राका
जाबत रहतै ज्ञान-शलाका
ताबत अपनेकेर अग-जगमे
फहरत निशि-दिन कीर्त्ति-पताका

विराट मानवतावादी

- शेखर कुमार श्रीवास्तव

प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' वस्तुतः साहित्यक सूर्य छलाह जिनक अस्त हायेबासँ साहित्य-संसार तिमिराच्छन्न भऽ गेल अछि । मैथिली ओ हिन्दी साहित्यमे हुनक अप्रतिम अवदान साहित्यिकेँ हरदम प्रकाश-पुञ्ज जकाँ देदीप्यमान करैत रहत। प्रो० सुमनक ओजस्वी, तपस्वी आ राष्ट्रवादी व्यक्तित्वक प्रसंगमे जतबे कहल जाय ओ सूर्यकेँ दीप देखायब सन होयत । सादगी आ सज्जनता हुनक सारस्वत जीवनक सुरभि छल जाहिसँ समाजक प्रत्येक वर्ग सुवासित होइत रहल ।

हमरा मोन पड़ैए हुनक सांसद रहबाक बीचमे एक हृदयस्पर्शी घटना । 1977 क घटना अछि जखन ओ सांसदक रूपमे दिल्लीक नार्थ ब्लाक स्थित सांसद फ्लैटमे रहि रहल छलाह । अपना माता-पिताक संग दिल्ली घूमय जा रहल छलहुँ, समस्या छल दिल्लीमे ठहरबाक । दिल्ली सन महग महानगरीमे टिकबाक समस्या लऽ कऽ हमरलोकनिक चिंतित रही । हमर पिता सुमनजीक सहृदय व्यक्तित्वसँ परिचित छलाह, मुदा आशंकित छलाह जे सुमनजी तँ आब सांसद छथि, हमरालोकनि सन आमजनक सुधि आब लेताह ? तथापि दिल्ली पहुँचलापर पिताजी हमरा सभकेँ सुमनजीक फ्लैट पर लऽ गेलाह । परिचय दैत कहलथिन- 'हम सभ दरभंगासँ आयल छी आ दू-चारि दिनक लेल अपनेक सान्निध्य आ स्नेहक पड़ाव चाहै छी ।'

एतबा कहब छल कि सुमनजी सहज ओ आत्मीय भावसँ कहलनि- 'ई तँ अहीँक कुटिया अछि, अहाँ जाबत चाही रूकी।'

हम अनुभव कयने रही जे साक्षात् भगवान भक्तक सेवामे उतरि अयलाह अछि । मनकेँ शांति भेटल । हमसभ सुमनजीक ओहि फ्लैटमे रहि अपन दिल्ली भ्रमणक कार्यक्रम पूरा कयल आ हुनक विराट मानवतावादी चरित्रसँ परिचित भेलहुँ ।

गुल्लोबाड़ा, दरभंगा

एकाकी के अहँ बरनिहार

-विश्वनाथ

5 मार्च 2002 । राति एगारह बाजिकऽ तीस मिनट पर आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'क महाप्रयाण ।.... 6 मार्च । दिनमे एक बाजि पन्द्रह मिनटपर बल्लीपुरक हेतु प्रस्थान....बीसम् शताब्दीक विशाल परिधिमे पसरल आचार्य 'सुमन'जीक महागाथाक अनेक पन्ना हमरा समक्ष जीवन्त भऽ उठल अछि। अर्द्धरात्रिमे हमर निद्रा भंग भऽ जाइत अछि ।.... निशाभाग राति । बाग्मती नदी... कछेड़मे हमर वासा... दौगल चल जाइत सड़क... निरभ्र आकाश... हमरा समक्ष अनेक वृत्त खण्ड साकार भऽ उठैत अछि ।

1971 । सी.एम. कालेजक प्रांगण... सुमनजी वर्गमे पढ़ा रहल छथि । शब्दक उत्पत्ति.. एक शब्दसँ अनेक शब्द. .. दुग्ध-धवल आभा... सौम्य... हमर अजोह बच्चामोन सुमनजीक सारस्वत स्वरूपसँ सम्मोहित भऽ उठैत अछि । हम मन्त्रमुग्ध भेल वर्गमे बैसल रहैत छी ।

दूरेसँ देखैत छियनि साइकिलपर चढ़ल सी.एम. कालेज आबि रहल छथि । धोती आ कुर्त्ता.... गौरवर्ण ! दरभंगा टाबरपर चल जाइत देखैत छियनि... फेर वर्गमे अबैत छथि... फेर हम मन्त्रमुग्ध ।

1972 । दरभंगा टाबरपर करमान लागल लोक । मंच आ माइक । विधान सभाक चुनाव । भारतीय जनसंघक उम्मीदवार प्रो. सुरेन्द्र झा 'सुमन' । दीपक छाप । भीड़मे हमहूँ ठाढ़ छी... भाषण चलि रहल छैक । सुमनजीक भाषण... हमर हृदय धड़कऽ लगैत अछि । पुलकित भऽ जाइत अछि... सुमनजीक शब्दमे विद्युत-प्रवाह... करेन्ट... हृदयसँ निकलिकऽ हृदयमे समाहित होइत ! सुमनजी भाषण कऽ रहल छथि- 'हम कहाँ ठाढ़ छी ? ठाढ़ तँ अहाँ लोकनि छी... टाबरपर अहाँ लोकनि ठाढ़ छी... हम तँ प्रतीक मात्र छी ।' धूँआधार थपड़ीक आबाज... गगनभेदी नारा- डांगे को कर दो तार... कम्युनिस्टों की हो गई हार ! ठीके चुनावमे सुरेन्द्र झा 'सुमन' विजयी । प्रातः सौंसे दरभंगाक विद्यार्थी राजकुमारगंजमे तूफान बनल.. अबीर आ गुलाल । सुमनजीक एक झलक- आइ तपस्या पूरा भेल ।... दीपक निकलल शानसँ ! टक्कर आ तूफानसँ !!

6 मार्च 2002क निशाभाग रातिमे हमर निद्रा पुनः भंग भऽ जाइत अछि... निःशब्द बितैत राति । पूज्य किरणजीक संयोजनमे अ.भा. मैथिली साहित्य परिषद्क अधिवेशन । कवि सम्मेलन । मधुपजी, सुमनजी, किरणजी आदि अनेक ऋषिकल्प कवि लोकनिक काव्यपाठ । किरणजीक अनुशंसापर कवि सम्मेलनमे हमर काव्यपाठ ।... आ तकर बाद सुमनजीसँ परिचय । हुनक आशीष... स्नेह ।

1974- 18 मार्च बिहारमे छात्र आन्दोलन... जयप्रकाश नारायणक सम्पूर्ण क्रांति... सुशील मोदी, रविशंकर आदि छात्र नेताक आगमन... आन्दोलनमे सुमनजीक सक्रिय सहभागिता. .. अन्ततः जे.पी.क आह्वानपर बिहार विधानसभासँ सुमनजीक त्यागपत्र ।

1974 सँ 1977क कालखण्डमे भारतक राजनीतिक परिदृश्यमे अनेक घटना, व्यतिक्रम आ वैचारिक मन्थन चलैत रहल । मधुबनी विधानसभाक उपचुनावमे सत्ताधारी पार्टी द्वारा लोकतांत्रिक गरिमाक हनन । आर्यावर्त आ सर्चलाइट प्रेसपर आक्रमण... जुलूसक नेतृत्व करैत लोकनायक जयप्रकाश नारायणपर लाठीसँ प्रहार... ललित बाबूक हत्या । अन्ततः 26 जून 1975कें आपातकालक घोषणा । लोकतंत्रपर कुठाराघात। सुरेन्द्र झा 'सुमन' कें गिरफ्तार कऽ लेल गेलनि । एहि कालखण्डमे सुमनजीसँ हमरा प्रत्यह भेट होइत छल । मिथिला मिहिरमे हमर रचनाक प्रकाशन होबय लागल छल । 1976क साओनक एकटा साँझ... सुमनजीक संग अन्तरंग वार्त्ता - अनेक बिन्दु, अनेक प्रश्न । 'मिहिर'क 17 अक्टूबर 1976क अंकमे प्रकाशित भेल रहय- महाकवि सुमनजीक संग अन्तरंग वार्त्ता ।

6 मार्च 2002 । निशाभाग राति । रातिक दू बजैत हेतैक । निन्द नहि भऽ रहल अछि । मोनमे विप्लव । रोसड़ाक समीप बल्लीपुर गाममे हेतनि सुमनजीक पार्थिव शरीर । सुतबाक उपक्रम करैत छी । स्वप्नावस्थित... निद्रा भंग भऽ जाइत अछि । फेर अनेक वृत्तखण्ड बनैत अछि । 1977 । लोकसभाक चुनाव । जनता पार्टीक गठन । दरभंगासँ जनता पार्टीक प्रत्याशीक रूपमे सुमनजीक लोकसभाक सदस्यक रूपमे निर्वाचन । दैनिक स्वदेशक प्रकाशनक पुनः परिकल्पना।

लोकसभाक जखन सदस्य रहथि, कहलनि- चलू ! अहाँक गाम चलब । हमर गाम अर्थात् उजान, उजानक एकटा टोल धर्मपुर । लोहना रोड स्टेशन । किरणजीक निवास-स्थान । कहलनि- किरणजीसँ भेट करबाक इच्छा भऽ रहल अछि । ट्रेनसँ हमरा लोकनि गेल रही- सुमनजी, अमरजी, मिहिरजी । 1979क गरमीक समय । भरि बाट सुमनजी खीरा, पान, चाह करैत लऽ गेलाह । हाथ खूजल

रहनि । पाइक कोनो हिसाब-किताब नहि । सब किछु लुटा देबाक अलमस्त फक्करपन । पाइ अछि तँ ठीक नहि अछि तँ ठीक ।... लोहना रोड स्टेशनपर राति 9 बजेसँ एगारह बजे धरि ट्रेनक प्रतीक्षा करैत हमरा लोकनि अनेक तहक गप्पमे डूबल रहलहुँ । दरभंगा एक बजे रातिमे पहुँचलहुँ । कहलनि- 'आब रातिमे अहाँ पूलक ओहि पार कोना जायब । चलू ! हमरे ओतए !' राति सुमनजीक वासा पर बीतल । जनतापार्टीक प्रयोग विफल भऽ गेल रहैक । लोकसभा भंग भऽ गेलैक । फेर सुमनजी दरभंगामे स्थायी रूपसँ रहय लागल रहथि ।

दैनिक स्वदेशक पुनः प्रकाशन । हमरा लोकनि विपत्तिक विकराल संघातक कारणेँ आत्मस्थ भऽ गेल रही । खोंता उजड़ि जकाँ गेल रहय ।... फेर सँ बनयबामे लागल रही । दैनिक स्वदेशक यज्ञमे अपेक्षित सहयोग नहि कऽ सकलियनि। सुमनजी ताहिसँ किछु अवसन्न भऽ गेल रहथि ।

रातिमे सड़कपर दौगल चल जाइत जीपक आवाज... निसबद्द राति । 6 मार्च 2002... अनेक कविताक स्मरण होइत अछि। प्रतिपदा... पयास्विनी.. अर्चना... अन्तर्नाद... कथायूथिका... गंगातरंगिणीक अनेक पाँती अनुगुंजित होइत अछि । मिथिला मिहिर... मिथिलांक मासिक स्वदेश... दैनिक स्वदेश - मैथिली भाषा साहित्यक विकासक अनेक संघर्ष यात्राक नेतृत्व करैत, मध्यम मार्गसँ सबमे सामंजस्य रखने ... नव-पुरानक हृदय हार भेल अजातशत्रु सुमनजी आब हमरा लोकनिक बीचमे नहि छथि ।

अन्तिम भेटक स्मरण कय हम एखन विचलित भऽ उठल छी । मौन वलित नहि रहनि । क्लान्त । जर्जर काया । 'रचना' पत्रिकाक अग्रिम अंकक प्रसंग चर्चा कयलनि । चाह अबैत अछि । नहुँए-नहुँए सुमनजी सिरमा तऽरसँ बिस्कुट निकालि हमरा आ अमरनाथकेँ बढ़ा दैत छथि । अन्हार भऽ जाइत छैक । हमरा लोकनि आशीर्वाद लय बिदा भऽ जाइत छी ।

राति बीतल जा रहल छैक । हम सूतऽ चाहैत छी... आस्ते-आस्ते निन्द भऽ रहल अछि । फेर निन्द टुटैत अछि.. . फेर वृत्तखण्ड बनैत अछि । हमरा लगैत अछि साहित्य आ राजनीतिक परिदृश्यमे सन्त परम्पराक एकटा पवित्र अध्याय समाप्त भऽ गेल अछि ।

एकाकी के अहँ बरनिहार
आदर्शवाद पर मरनिहार

बिन्दु मात्र स्नेहक संवल लए आदरणीय सुमनजी आदर्शवादपर अपन जीवनक आहुति चढ़ा देलनि । चिताक मुट्ठी भरि राख. .. आ चिरकालिक यश: काया-नास्ति येषां यश: काये जरा मरण जं भयम् ।... चलैत रहू... चलैत रहू..चरैवेति...चरैवेति.. लेखनमे समर्पित एकटा अक्षर चेतना... बिन्दु-बिन्दु शब्द-संयोजन करैत एकटा सम्पादक ... आत्माक अमृतसँ शिष्यक हृदयकेँ आप्लावित करैत एकटा शिक्षक... त्याग आ तपस्याक व्रती एकटा राजनीतिक कार्यकर्त्ता ... जन्मजात सर्वहारा ... मैथिलीक अथक योद्धा..

राति खतम भऽ रहल छैक ... ब्रह्म मुहूर्त-अमृतस्य पुत्रा... उठू । जागू । अपन अधिकारकेँ प्राप्त करू- सुमनजीक स्मृति हमरा जगा रहल अछि... उषा समकालमे पसरैत सूर्यक आभाकेँ हम नमन करैत छी ।

कर्मवीर पुरुषक संघर्ष गाथा थिक आचार्य सुमनक जीवन चरित्र

- शंकरदेव झा

मैथिलीक युवा साहित्यकार एवं पत्रकार शंकरदेव झा द्वारा मूलतः मैथिली में लिखित आ हिन्दीमे अनुदित ई रचना मैथिलीक प्रतीक पुरुष आचार्य सुरेन्द्र झा सुमनक एकानवेयम जन्मदिवस आश्विन शुक्ल पंचमी तदनुसार 2 अक्टूबर 2000कें प्रकाशित हिन्दी दैनिक 'आज' सँ सभार लेल गेल अछि। ओहि दिन मिश्रटोला (दरभंगा) मे मैथिलीक शिखर पुरुष पं० श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क अध्यक्षतामे 'आदित्य सदन' मे आयोजित आचार्य सुमन जन्मोत्सवक अवसरपर साहित्यकार एवं मैथिली प्रेमी लोकनिक समक्ष मैथिलीक वरिष्ठ कवि ओ साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित डा० भीमनाथ झा एहि आलेखक वाचन कयने छलाह - अ. सं.

मैथिली साहित्यक शिखर पुरुष, भारतीय वाङ्मयक आचार्य, वयोवृद्ध मनीषि, मिथिलाक विदेह, याज्ञवल्क्य, गौतम आदि ऋषि परम्पराक अद्यतन कड़ी आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' अपन जीवनक नब्बे वर्ष पूरा कयलनि अछि। वृद्धावस्थाक कारणेँ हुनक शरीर आब भने कमजोर भऽ गेल अछि, मुदा उत्साह ओ ओजमे किञ्चितो कमी नहि अयलनि अछि। एखनो बहुत किछु करबाक ललक ओ अन्तः ऊर्जासँ परिपूर्ण आचार्य सुमनक जीवन, कर्म, चिन्तन ओ दर्शन वस्तुतः अचम्भित कऽ देबा योग्य अछि- ओ महाकवि विद्यापतिक उक्ति- 'तिले-तिले नूतन होय' केँ चरितार्थ करैत अछि। जीवनक झंझावात्केँ सहि कऽ दुर्बल बनल एहि वयोवृद्धक शरीरमे बसैत आत्मा ओ मस्तिष्क तँ चिर नवीन अछि- आधुनिकोसँ बेसी आधुनिक। आचार्यक एकगोट कविताक दूगोट पंक्ति मोन पड़ैत अछि-

'प्राचीन शीर्ण जगतीक वीणमे
बाजि रहल अछि युग नवीन।'

लगैत अछि जे कविक ई उक्ति आइ हुनकहिपर सटीक बैसि रहल अछि।

आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' एक व्यक्ति नहि स्वयंमे एकटा संस्था छथि। विराट् अनुभवसँ संबलित, बहुआयामी व्यक्तित्वक स्वामी आचार्य सुमन वस्तुतः मिथिलाक एक युगक प्रतिनिधित्व करैत आधुनिक मैथिली भाषा ओ साहित्यक प्रतीक पुरुष बनि गेल छथि। जाहि प्रकारेँ विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुरक कारणेँ बङ्ला भाषा ओ साहित्यक एकगोट विशिष्ट परिचिति स्थापित भेलैक, तद्वते आचार्य सुमन आइ मैथिली भाषा ओ साहित्यक परिचित बनल छथि। मैथिली भाषाक दधीचिक रूपमे भने आचार्यक ख्याति चतुर्दिक पसरल हो, मुदा ओ एखनहुँ तल्लीन छथि, जहिना अपन तरूण, युवा ओ प्रौढ़ावस्थामे रहैत छलाह।

9 अक्टूबर 1910इ. केँ समस्तीपुर जिलाक बल्लीपुर गाममे एक सामान्य पण्डितक परिवारमे जन्म लेल आचार्य सुमनक जीवन चरित विविधतासँ परिपूर्ण अछि। एकहि संग पत्रकार, साहित्यकार, प्राच्य विधाक पण्डित, स्वतंत्रता आन्दोलनक संग्रामी, पूर्वाञ्चलीय भाषा ओ संस्कृतिक विशेषज्ञ, राजनीतिज्ञ, प्राध्यापक आ अपन वृहत् कुटुम्बवला परिवारक मुखियाक रूपमे कर्त्तव्यक निर्वहण् करैत रहनिहार आचार्य सुमनक एखन धरिक जीवन यात्रामे अनेक उतार-चढ़ाव अबैत रहल अछि, अनेक पड़ाव आयल मुदा कतहुँ ठहराव नहि आयल। 'चरैवेति-चरैवेति'क मूलमंत्रकेँ आत्मसात कऽ लेनिहार एहि आदर्श पुरुषक जीवन संघर्ष, एकटा कर्मवीर पुरुषक विजयगाथा थिक, जे निस्सन्देह नव पीढ़ीक हेतु प्रेरक ओ अनुकरणीय अछि।

यद्यपि आचार्य सुमनक विधिवत् शिक्षा संस्कृत माध्यमसँ भेलनि, मुदा स्वाध्यायक बलपर आचार्य बङ्ला, हिन्दी, अंगरेजी, उड़िया, असमी, नेपाली आदि भाषापर अधिकार प्राप्त कयने छथि आ मैथिली तँ हुनक मातृभाषे थिकनि। अपन जीवनक प्रारम्भ आचार्य पत्रकारितासँ कयलनि। 1935 इ. मे दरभंगासँ प्रकाशित साप्ताहिक पत्रिका 'मिथिला मिहिर'क सम्पादक बनलाक बाद आचार्य अपन दृष्टि कौशलसँ एहि पत्रिकाकेँ परतन्त्रताक पीड़ा भोगि रहल जन समुदायक आवाज ओ मैथिली भाषक शिरोमुकुटक रूपमे बदलि देलनि। 1936 इ. मे ओ एहि पत्रिकाक 'मिथिलांक' नामसँ जे एकगोट विशेषांक निकाललनि आइयो ओकर जोड़ा नहि लागि सकल अछि। वस्तुतः निराशाक अथाह सागरमे उबडुब करैत मैथिल समुदायकेँ एहि 'मिथिलांक'क माध्यमसँ आचार्य, हुनक भव्य गरिमामय अतीतसँ परिचय करा एक बेर पुनः स्वर्णिम भविष्यक निर्माण हेतु उत्प्रेरित कयलनि। वस्तुतः पत्रकारिताकेँ समाज-सेवा माननिहार आचार्य सुमन स्वदेश, पल्लव, इजोत, वैदेही, जागृति, मैथिली आकदमी पत्रिका आदिक माध्यमसँ समाजमे अलख जगबैत मैथिलीक सेवा करैत रहलाह अछि। मैथिली भाषामे प्रथम दैनिक पत्र 'स्वदेश'क दू-दू खेप प्रकाशनक श्रेय हिनकहि छनि।

अपन छात्रावस्थहिसँ साहित्य साधनामे जुटल रहनिहार आचार्य सुमनक रसवर्षिणी लेखनी आइयो ओही अबाध

गतिसँ चलि रहलनि अछि । मैथिली, संस्कृत एवं हिन्दीभाषामे साहित्यक विभिन्न विधामे आचार्य द्वारा लिखित पोथीक संख्या लगभग एकसयक लगपास अछि । राष्ट्रवादक भावनासँ ओतप्रोत, गम्भीर चिन्तन एवं समसामयिक अपेक्षाके ँ उद्दीप्त करैत रहनिहार आचार्य सुमनक लेखनीसँ निःसृत अर्चना, प्रतिपदा, साओन भादव, पयस्विनी, अंकावली, दत्तवती, उत्तरा, कृष्णावतरण, अन्तर्नाद, भारत वंदना सन अनेकानक कृति गरिमामय साहित्यिक परम्पराक मर्यादाके ँ नहि केवल स्थापित कयलक अछि, अपितु अक्षर जगत्क ई अनमोल रत्न सभ विश्वक श्रेष्ठ साहित्यक माला गंथबा योग्य अछि । एक दिस जँ कालिदास, भतृहरि, शंकराचार्य आदि के ँ उत्तर दैत रहलाह अछि, इतिहास प्रसिद्ध नायक-नायिकाके ँ आधार बनाय काव्यक रचना करैत रहलाह अछि तँ दोसर दिस समाजक कमजोर उपेक्षित वर्गके ँ साहित्यक विषय बनौलनि आ ओकरा केन्द्रमे राखि 'उगनाक दायादवाद' नामक उपन्यासक रचना कयलनि। आइ आचार्यक शरीर दुर्बल आ नेत्रक ज्योति मलीन भऽ गेलनि अछि, तथापि अन्तर्मनमे उठैत भावनाक तरंगके ँ कागतपर उतारि लेबाक ललक कम नहि भेलनि अछि । मैथिली भाषाक कोशके ँ समृद्ध करैत रहबाक अपन संकल्पक कारणे एहि वार्द्धक्यहुमे अपन विगत जीवनक संस्मरणके ँ 'मन पड़ैत अछि' नामसँ लिखि कऽ प्रकाशित करौलनि अछि ।

मातृभाषाक सेवाक कारणे ँ जतऽ आचार्यके ँ अनेकानेक सम्मान ओ पुरस्कार आदि सभ प्राप्त होइत रहलनि अछि तँ दोसर दिस हुनक निन्दक ओ आलोचकक संख्या सेहो कम नहि रहल अछि, मुदा एकटा अनासक्त योगी जकाँ पुरस्कार वा निन्दा, ककरो परवाहि नहि करैत अपन मिशनमे आइ तक लागल छथि। परम्पराक प्रति आस्था और आशावादितामे अटूट विश्वास रखनिहार आचार्य सुमनक मैथिली सेवा कोनो फल प्राप्तिक इच्छासँ नहि अछि । एहि भाषाक लेल काज कयनिहारकँ आचार्य सुमन सतत् ई कहि कऽ प्रेरित करैत रहलथिन अछि जे - 'अहाँ एहि बातक अपेक्षा कखनो नहि करू जे मैथिली हमरा की देलक, चिन्ता केवल एहि बातक रहय जे एखन धरि मातृभाषाके ँ अहाँ की देलियैक अछि ।'

आचार्य सुमन अपन उपस्थिति आ अवदानसँ भारतीय राजनीतिके ँ गरिमांडित कयलनि अछि । परतन्त्र भारतमे अपन लेखनीसँ अलख जगौनिहार आचार्य सुमन अपन राजनीतिक भूमिकाक शुरूआत कांग्रेससँ कयलनि, मुदा स्वतंत्राक पश्चात हिन्दू महासभा, रामराज्य परिषद्, जनसंघ, जनता पार्टी आ अन्ततः भारतीय जनता पार्टी सँ सम्बद्ध रहलाह । 'राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ' सँ हिनक लगाव सेहो ककरो सँ नुकायल नहि अछि । आपात्कालमे देशमे लोकतंत्रक पुनः स्थापनाक हेतु संघर्ष कयलनि आ कारावासमे रहलाह । रामनन्दन मिश्र, गोलवलकर, मुंजे, सावरकर, श्यामा प्रसाद मुखर्जी, दीन दयाल उपाध्याय, नानाजी देशमुख, बाला साहेब देवरस, रज्जू भैया, अटल बिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी आदि अनेकानेक राष्ट्रीय चिन्तक ओ राजनेता लोकनिक संग घनिष्ठतम सम्पर्क रहलनि अछि आ आइयो छनि । आइयो भाजपा मे हिनका अभिभावक सम्मान देल जाइत छनि । सक्रिय राजनीतिमे रहैत आचार्य सुमन दरभंगा नगरपालिकाक सदस्यसँ लऽ कऽ दरभंगाक विधायक ओ 1977 इ. मे दरभंगाक सांसद सन शीर्षस्थ पद धरिक यात्रा कयलनि, मुदा बादमे आचार्यके ँ राजनीतिक बदलैत रंग-ढंग नहि रूचलनि आ 1980 इ. सँ पुनः साहित्य ओ समाज सेवा दिस घुरलाह जाहिमे एखन तक रमल छथि ।

साहित्य आ राजनीतिक मणिकाञ्चन योगसँ समन्वित आचार्य सुमनक सम्पूर्ण साहित्य अखण्ड भारतक परिकल्पना, सर्वजन उत्थान, सबल राष्ट्रक निर्माणक आकांक्षा ओ राजनीतिक स्वच्छताक चिन्तनसँ ओत-प्रोत अछि । कखनो-कखनो राजनीतिमे पसरि रहल भ्रष्टाचार आ साहित्यमे विकृति मूलक प्रवृत्तिक प्रचार आचार्यके ँ विखिन्न ओ चिन्तित कऽ दैत छनि, मुदा ते ँ निराश नहि छथि । 'प्रत्येक घनघोर अन्हरिया रातिक पश्चात ज्योतित प्रभातक आगमन होयबै करतैक' केर दर्शनमे विश्वास रखनिहार आचार्य सुमनके ँ एहि बातक दृढ़ विश्वास छनि जे हुनक सपनाक भारत आ अधिकार सम्पन्न मैथिली भाषाक कल्पना एक ने एक दिन साकार होयबे करतैक ।

एहन ऋषि स्वरूप भारतीय मनीषि परम्पराक संवाहक युगपुरुष आचार्य सुमनक उपमा कथीसँ देल जाय ँ ओ तँ अनुपमेय छथि- 'तोहर सरिस एक तो ँहे माधव, हुनक पीयूषवर्विणी लेखनी एहिना निरन्तर बरसैत रहय, पितामहतुल्य एहि माहपुरुषक गरिमामय उपस्थिति चिरन्तन बनल रहय, हिनक वरदहस्त सदैव समाजक शीश पर रहय । ईश्वरसँ यैह प्रार्थना जे आचार्य सुमन दीर्घजीवी होथु । विगत ओ आगत शताब्दीक सन्धिस्थल पर ठाढ़ एकानवेयम जन्म दिवसक अवसरपर एहि महापुरुषके ँ शत्-शत् नमन ओ कोटिशः अभिनन्दन ।

अहाँ अहीँ सन सोझ, सौंस, सॉठल, सरिआयल
माँजल पंचपात्रमे गंगाजल ओरियायल
सम अपमान-मान, सम शत्रु-मित्र, सम जल-थल
जहिना विल्वपत्र, ओड़हुल, तहिना तुलसी-दल

-डा० रमाकान्त पाठक

सरस्वतीक मौन उपासक : सुमनजी

– डा० फूलचन्द्र मिश्र 'रमण'

> *प्रस्तुत आलेख हिन्दी दैनिक 'पाटलिपुत्र टाइम्स' 9 अक्टूबर 1986 सँ साभार लेल गेल अछि जे महाकवि आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'क 76 म जन्मदिनपर प्रकाशित भेल छल – अ०सं०*

समस्तीपुरक बल्लीपुर नामक गाममे 9 अक्टूबर 1910 ई. केँ बालक सुरेन्द्रक जन्म भेल छल । 'परम प्रिय पावन तिरहुत देश'क जानल-मानल गीतकार पं० भुवनेश्वर झा अहाँक पिता छलाह । प्रारम्भिक शिक्षेक समय अहाँक कवि-मेधा चमकि उठल छल । पूर्ण योग्यताक सङ्ग साहित्याचार्यक उपाधि प्राप्त कयल ।

किछु दिनक लेल 'इंग्लिश हाइ स्कूल'मे सहायक शिक्षकक रूपमे सेवा दऽ दरभंगासँ प्रकाशित 'मिथिला मिहिर' साप्ताहिक पत्रिकाक सम्पादक-पदपर 1935 ई० मे नियुक्त भेलाह । मात्र 25 वर्षमे एहि महत् कार्यक सम्पादनार्थ अहाँक पदस्थापन निश्चितरूपसँ अपनेक योग्यता एवं दक्षताक परिचायक मानल जायत । एहि पदपर यद्यपि अहाँ 1954 धरि बनल रहलहुँ, मुदा 1936 मे जे 'मिथिला मिहिर विशेषांक' अपने बहार कयलहुँ ओ मैथिली साहित्ये नहि हिन्दी साहित्योक लेल अमूल्य निधि अछि । एहि लेल हिन्दी पत्रकारिताक इतिहासोमे अपने स्मरणीय रहब । आचार्य सुमन जनवरी 1948 मे 'स्वदेश' नामक मैथिली मासिक पत्रिकाक प्रकाशन अपना स्तरसँ प्रारम्भ कयल । 1953 मे सी.एम. कॉलेज, दरभंगामे मैथिली विषयक अध्यापक पदपर नियुक्ति भेल । अपन लगन ओ निष्ठाक परिणामस्वरूप ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालयमे स्नातकोत्तर मैथिली विभागाध्यक्षक पदोकेँ अपने अलंकृत कयल । आचार्य सुमन मुख्यत: कवि छथि । रस-सिद्धांतक प्रबल उद्‌घोषक, ध्वनि एवं औचित्यक समर्थक तथा अर्थ-गौरवक प्रतीक सुमन मैथिली साहित्यक 'भारवि' मानल जाइत छथि । अखन धरि लगभग एकतीस गोट मौलिक काव्य-पुस्तक प्रकाशित छनि । अनूदित एवं सम्पादित पुस्तककोक संख्या पन्द्रह (?) छनि । 'मैथिली काव्यपर संस्कृतक प्रभाव' तँ व्याख्यान-मालाक अन्तर्गत अहाँक भाषण अछि, मुदा विद्वानलोकनिक दृष्टिमे ई एकगोट शोधग्रन्थ अछि । आइ-काल्हुक शोधकर्त्तागणक लेल उदाहरणस्वरूप एकटा उत्कृष्ट बानगी अछि । छिटफुट निबन्ध, कहानी, समालोचना, संस्मरण एवं रेडियोरूपक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित होइत रहल अछि । सर्वाधिक विशेषता हिनक गद्य-शैलीक रहल अछि- गागरमे सागर अथवा करतलमे ब्रह्माण्डक परिकल्पनाकेँ ओहिमे चरितार्थ होइत देखल जा सकैछ । सैकड़ो पुस्तकपर हिनक भूमिका देखि प्रतीत होइछ, मानू कोनो रूपवतीक माथपर घोघट देल गेल हो । गद्य हो अथवा पद्य दुनूमे एकाधिकारी कवि सुरेन्द्रकेँ विचरण करैत देखिए कऽ प्राय: विद्वानगण 'कवि सम्राट' अथवा 'कविक कवि' कहलनि अछि। 'पयस्विनी' काव्य-संग्रहपर 1971 मे साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा 'उत्तरा' खण्डकाव्यपर 1981 मे मैथिली अकादमी द्वारा 'विद्यापति पुरस्कार' सँ अहाँ सम्मानित कयल गेलहुँ । अन्य कतेको समाजिक संस्था द्वारा यथोचित सम्मानक संग अभिनन्दित भेल छी । अ० भा० मैथिली साहित्य परिषदक 1973 सँ अद्यपर्यन्त निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित होइत रहलाह अछि । वर्षो पूर्व महामंत्री सेहो रहि चुकलाह अछि। मैथिली अकादमीसँ सम्बद्ध एवं साहित्य अकादमी, दिल्लीक 1983 सँ पांच वर्षक लेल मैथिली भाषाक प्रतिनिधि एवं ओकर कार्यकारिणीक सदस्यो अहाँ छी । दरभंगा स्थित दुनू विश्वविद्यालयक सिनेट आ विद्वत् परिषद्क सदस्यो अहाँ भेलहुँ ।

मध्यम कदकाठीक दुबर-पातर, गौरवर्ण, प्रसन्न मुखमण्डल तथा विनयी स्वभावक पूज्य महाकविक लग पहुँचिते अपनत्वक सहज बोध होमय लगैछ । जखन देखू तखन किछु पढ़ैत वा लिखैत । अतिरिक्त समयोमे ओ निरर्थक नहि बैसि-कखनो तरकारी कटैत तँ कखनो फाटल कपड़ापर सूइ-डोरा चलबैत, प्रूफ देखैत, जिज्ञासु शिक्षक, अन्वेषक, साहित्यकार ओ पत्रकारसँ विमर्श करैत – पल भरिमे समस्याक समाधान करैत । हुनक मीठ कर्णप्रिय वाणीमे सौजन्यक जे अपूर्व राग हम देखलहुँ ओ मर्यादा पुरुषेमे सम्भव अछि । हिनक स्वाभिमानी व्यक्तित्व झलक एहिसँ भेटैत अछि जे वर्षो राज दरबारक सान्निध्य एवं सेवामे संलग्न रहितो दरबारी कवि नहि बनलाह । दरभंगामे हिनक निवासपर साहित्यकार एवं विद्वानक दैनिक उपस्थिततिसँ सान्ध्य-गोष्ठी भऽ जाइत अछि जो देखिते-सुनिते बनैछ । बाहरसँ आयल जिज्ञासु सेहो एहिमे सम्मिलित होयबाक लोभ संवरण नहि कऽ पबैत छथि । वस्तुत: कवि शाश्वत मूल्यक उपासक होइत अछि, तँ शिक्षक ओकर उद्‌घोषक, पत्रकार यथार्थक उद्‌घाटक होइत अछि तँ

(शेष पृष्ठ 32 पर)

संस्थानक अभिभावक छलाह सुमनजी

– प्रो० वैद्यनाथ चौधरी 'बैजू'

आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'क सम्पर्कमे 1967 इ. मे अयबाक अवसर भेटल । 1973मे मैथिली स्नातकोत्तर विभागमे छात्र नहि जकाँ छल । हम सी.एम. कालेजमे छात्र संघक महासचिव रही आ एम.एससी.मे नामांकन करा चुकल रही । नागमणि द्वारा परीक्षा लेल गेल छल । ताहिमे स्नातकक परीक्षाफल नगण्य भेल छलै । ताहि लऽ कऽ मैथिलीमे विद्यार्थीक कमी छल । आदरणीय सुमनजी कहलनि– 'बैजूजी मैथिलीक हित लेल अहाँ मैथिली एम.ए. मे नाम लिखाबी । विधानकेँ ताखपर रखैत ओही दिन मैथिलीमे सेहो नाम लिखौलहुँ आ हमरा लगा कऽ 1973-75 सत्रमे कुल पांच छात्र भेलाह । सुमनजी हमर शिक्षक आ अभिभावक छलाह । संस्थान परिवारक मुखिया छलाह । 1972मे प्रथम बेर दरभंगा शहरसँ विधायक भेल छलाह । हुनक सरलताक कारणेँ हमरा सभकेँ कहियो नहि बूझि पड़ल जे 1972 सँ 77 धरि ओ विधायको छथि । 1974 सँ 77 धरि जे.पी. आंदोलनमे मीसाक अंतर्गत जेलयात्रा करय पड़लनि । हमहूँ छात्र आंदोलनक क्रममे 1974 सँ 77 धरि अनेक बेर जेल गेलहुँ आ मीसामे बंद रहलहुँ 1977 मे फेर सुमनजी लोकसभाक लेल चुनल गेलाह । हमरा नजरिमे ओहू समयमे ओ सांसद कम साहित्यकार बेसी छलाह । मैथिलीक कार्य प्रमुख छलनि ।



आचार्य सुमनक संग रमानाथ मिश्र 'मिहिर'

विद्यापति सेवा संस्थानसँ 1976 मे जुड़लाह । 1984 मे मणिपद्मक निधनक बाद संस्थानक अध्यक्ष भेलाह । वर्ष 1984क जनवरी (अगहन) मास छल । बी.एड्.क ट्रेनिंगमे पूर्वसँ समाविष्ट मैथिली विषयकेँ ओहिमेसँ हटौल गेल छल । भयंकर वर्षा भऽ रहल छलैक । सरकारक एहि निर्णयक विरोधमे एम.एल.एस.एम. कालेजसँ आर.डी.डी. कार्यालय लेल जुलूस चलल । ओ वर्षाक बर्फ सन पानिमे भीजैत जुलूसमे पैरे चलैत रहलाह । अमरजी आ रामदेव बाबू सेहो छलाह । मैथिलीकेँ अष्टम अनुसूचीमे शामिल करबाक मांग, मिथिलाक सर्वांगीण विकास ओ मिथिला राज्यक निर्माण लेल 1982 सँ 2002क बीच कतेक सौ आंदोलनमे मिथिला सँ लऽ वोट क्लब दिल्ली धरि धरना, प्रदर्शन, आमरण अनशन, संसद भवन घेराव कार्यक्रम संस्थान द्वारा चलल जाहिमे भाग लैत रहलाह । 1986 मे बड़ी रेल लाईन, मिथिला राज्य निर्माण, मैथिलीकेँ अष्टम अनुसूची मे शामिल करब आ मिथिलाक सर्वांगीण विकासक संग 13 सूत्री मांङक लेल दरभंगा टीसनपर हजारो व्यक्तिक नेतृत्व करैत रेल रोकलनि आ प्रथम दिन कार्यकारी अध्यक्ष पं. देवनारायण झाक संग जेल गेलाह । पुनः अन्य नेतागण विभिन्न तिथि मे गिरफ्तारी दऽ जेल गेलाह । जनवरी 1990 मे हुनका ओ प. देवनारायण झाक नेतृत्व मे बड़ी रेल लाइनक लेल आंदोलन भेल । दरभंगा टीसनपर पुलिस दुनू गोटे पर लाठी चलौलक । हमर जे दुर्गजन भेल से सर्वविदित अछि । 1992मे बीपीएससी सँ मैथिली हटौल गेल । संपूर्ण मिथिला ओ बाहरो संस्थान द्वारा आंदोलन आहूत कयल गेल । दिल्लीक धरती पर जेहन आंदोलन भेल से 'न भूतो न भविष्यति' । सुमनजी ओहूमे संग छलाह । सैकड़ो आंदोलनमे हुनका संग रहलहुँ । संस्थानक अंतिम कार्यक्रम विद्यापति पर्व 28,29,30 नवम्बर 2001 केँ भेल । पहिल दिन आबि संस्थान, हमरा, समस्त आयोजक, श्रोता ओ संपूर्ण मिथिलावासीकेँ आशीर्वाद देलनि । कहने छलाह 'अगिला वर्ष आबि सकब की नहि' से सत्य भेल । 5 मार्च 2002 कँ ओ अनंत यात्रापर बिदा भऽ गेला 6 मार्चक भोरमे बल्लीपुरमे पचकठिया देलियनि आ अभिभावक विहीन भऽ घुरलहुँ । संस्थानोक माथपरसँ विशाल वट वृक्षक छाया उठि गेलैक अछि ।

कथा

खोपड़ीमे

– आर्चाय सुरेन्द्र झा 'सुमन'

खो

रवि दिनुका तेसर पहर छल । स्कूल बन्ने छल । धीया-पूतासभ छुट्टीक खुशीमे संगी-साथी संग किलोल करैत सप्ताह भरिकेर चिन्तारूपी धूराकेँ आनन्दक नदीमे धो रहल छल । ललित आइ सकाले घरसँ तीर जकाँ निकलि आयल। खेलधूपमे दुपहर उड़ौलक । तेसरो पहरा बाते-बातमे निकलि गेल ।

ओमहर माय पनपिआइ बना ओकर बाट जोहि रहल छलीह, मुदा ओ नहि आयल । बुढ़िया साँझ तारावलीक आँखि औछौने प्रतीक्षामे छल, मुदा बालक चन्द्र एखन धरि कोरामे कूदल-फानल नहि छल ।

ललित खेलिकूदि कऽ थाकि गेल । वीरेन्द्र ओकरा हकारि कऽ अपना घर लऽ गेल । तेमहला मकान, सुन्दर आ चिक्कन-चुनमुन ! फोटो आ बेल-बूटासँ सजल कोठलीसभ, पर्दा लागल खिड़की, पंक्तिवद्ध सजल फूलक गमला, सभ सुन्दर आ आकर्षक छल । खास कऽ वीरेन्द्रक कोठली ओकरा बड़ नीक आ लोभाबयवला लगलै । मोलायम गद्दीदार पलंग, सोनहुल जिल्द सभसँ चमकैत अलमीरा, फैशनेबुल कुर्सी, पढ़बा-लिखबाक सामानसँ सजल टेबुल, देवालमे लटकैत चित्र आ बड़की टा टङल अयना- सभ हृदयकेँ चकित कऽ रहल छल । ओकर जीह वीरेन्द्रक संग बात करबामे लागल छलै । आँखि लोभाओन सजावटिपर अँटकल छलै । मन अभावक कोनो झाड़ीमे ओझरायल छल ।

बड़ी काल ओतय रहल । संगीक व्यवहारसँ तँ प्रसन्न छल, मुदा ओकर हृदयपर अभावक गहीँर चोट पड़ल छल । सजल-धजल सुन्दर महल ओकरा आँखिक आगाँ अखन धरि नाचि रहल छलै, मुदा आब अपन टूटल-फाटल टटघर आँखिमे घूमय लगलै ।

साँझ बीति गेल । बेटाक प्रतीक्षामे माय अधीर छलीह, ताबत ओ आबि गेल, मुदा फुदकैत नहि । देरी हेबाक कारण तँ कहलक, किन्तु चहकैत स्वरमे नहि । माय सोचलनि, मन सुस्त छै । मने-मन देवी-देवताक कबुला भेल । जखन हवाक झाँकमे नाव डगमगाइत हो तँ नाविककेँ छोड़ि ओकरा के भरोस देया सकैछ ?

प

आब चाहे वैभक देबाल आ गरीबीक खाधि ललित आ वीरेन्द्रकेँ दूरक बसनिहार बना दौक – दुनूक रहन-सहनमे दिन-राति जकाँ अन्तर भरि दौक, मुदा ओ दुनू एके रक्तक छल । दुनूक पितामह पितिऔते छलाह । गामक बैसकीमे दुनू लेल खाट बरोबरि कऽ ओछौल जाइत छल । एककेँ दोसराक दशापर स्पृहा अथवा दया अयबाक मौका नहि छल ।

वीरेन्द्रक पिता शहरमे आबि कऽ बसि गेलाह । भाग्य अनुकूल छल । बजारक रुखि चिन्हैत छलाह । दोकानकेँ किछुए दिनमे चमका लेलनि । टाका बरिसय लागल । शहरक छातीपर माथ उठौने आलीशान भवन आकाशसँ बतिआय लागल । एही महलक सीपीक मोती छल वीरेन्द्र ।

ललितक पिताकेर माथपर ऋणक बोझ छल । सूदिकेर जालमे फँसि गेलाह । जमीन दऽ जान बचलनि । एमहर बड़ प्रयाससँ दस टाकाक नोकरी भेटलनि । कोनहुना दिन काटि लैत छथि । एही गरीबीक कोराक लाल छल ललित ।

एहि तरहेँ ललित आ वीरेन्द्र एते लग होइतो बहुत दूर भऽ गेल । एकटा उन्नतिक शिखरपर बसि गेल तँ दोसर दीनताक झीलमे जा खसल । एकटा महलक अमीर छल तँ दोसर खोपड़ीक गरीब ।

ड़ी

ललित जखन कखनो वीरेन्द्रकेँ देखय तँ लजा जाय। अपना ओ ओकरा बीच महल आ कुटियाक भेद देखय । स्कूलक आनो छात्र ललितकेर श्रेणीक छल, किछु वीरेन्द्रक श्रेणीक सेहो । ओकरा लोकनिकेँ ई भेद कखन देखा पड़ैत? सभक लग बालपनक सोना छल । तखन कमी कोन चीजक आ कोन तरहक भेदभाव ? निश्च्छल हृदय आ निफिकिर मोनक हिस्सा बच्चा सभमे बरोबरि कऽ बाँटल छल, मुदा कोनो अधलाह घड़ीमे ललितक कोमल हृदयक फूलपर चिन्ताक कीड़ा डेरा जमा लेलक ।

ओहि दिन शनि छलैक । छुट्टी सबेरे भेटि गेल । जालसँ छूटल माछ जकाँ, पिजड़ासँ उड़ल नव चिड़ै जकाँ बच्चासभ फुदकि रहल छल । ललितक हाथ पकड़ि वीरेन्द्र कहलक- 'चल ललित ! आइ तोरा घर पहुँचा दियौ ।'

ललित चुप छल । मने मन गरीबीकेँ कोसि रहल छल । आइ हमरो महल रहैत तँ ओही शानसँ वीरेन्द्रकेँ बैसबितहुँ । सुन्दर चमकैत फर्नीचरक सजावटिसँ अपनाकेँ वीरेन्द्रक उपयुक्त संगी साबित करितहुँ ।

दुनू घर पहुँचल । ललितक माय दुनूके ँ प्रेमसँ जलपान करौलनि । वीरेन्द्रसँ मीठ-मीठ बात कयलनि । माता-पिताक प्रेम आ बहिनिक दुलार पुछलनि । ललित तँ अपन अवस्थापर लजा रहल छल, मुदा वीरेन्द्रके ँ खोपड़ीक स्वागत महलके ँ बिसरा देलक ।

★★★

ललितक पिता बातचीतक क्रममे जखन कखनो संतोषक महिमाकेर गीत गाबथि आ बीचमे श्लोकक उद्धरणके ँ हारमोनियमपर बाजाबथि तँ से ललितके ँ कर्णप्रिय नहि लगैक। बच्चा आ जुआनक अनुरागपर बूढ़क वैराग्य कोना विजय पाबय ? बुढ़ारीक संतोष नव वयसक पियास कोना मिझाबय ? नदी किनारक एकान्तमे ठाढ़ कुटी वासनाके ँ दुत्कारि सकैछ, मुदा वैह जँ महलक पड़ोसिया भऽ जाय तँ ओकरापर तृष्णाक जादू असरि कऽ जाय ।

ललितक वश चलैत आ जँ लक्ष्मीक एकोटा कटाक्ष ओकरापर पड़ैत तँ ओ एते दिनसँ आराम पहुँचौनिहार बुढ़ायल खोपड़ीके ँ तुरत उखाड़ि फेकैत । टूटल स्टूलके ँ जारन-घरक जेहलखाना देखबैत । फेर भवन ठाढ़ होइत । फैशनेबुल समानसँ कोठलीसभ सजि जाइत आ विशाल फाटकपर दरबान टहलैत नजरि अबैत !!

मुदा मोनक लड्डूसँ कखनो पेट भरलैए ? हवाइकिला मोनेक भूमिपर तँ बनौल जाइत अछि ।

मे

तहिया 24 इसवी छलै । आब तँ ओकरा बितला दस साल भऽ गेलै । ललितक खोपड़ी महल तँ नहि भऽ सकल, हँ ओ अपने बच्चासँ जुआन भऽ गेल । समयक दौड़ाहा दौड़ि रहल छल । एखन 34 इसवीक डाक ओकरा कान्हपर छलैक । जमानाक हाथमे केहन चिट्ठी भेटैत अछि, ई तँ घटनाक झोड़ी फुजलेपर पता लागि सकत ।

ओहि दिन आफिसक लेल 15 जनवरी छलैक । धार्मिक हिन्दू लोकनिक पंचांगक सोमवती माघी अमावस्या आ व्रती मुसलमान लोकनिक ईदक पूर्व दिन ।

भोर बीतल । दुपहर निकलि गेल । नित्य जकाँ दुनियाँ काज धन्धामे डूबल छल । स्कूल-कालेजक बेंच-कुर्सी ठेकानसँ भरल छल । आफिसमे क्लर्कक कलम ओही तेज गतिसँ दौड़ि रहल छल । प्रेसक टिखटिख आ खट-खुट किए बन्न रहैत ? बजारमे मोटरगाड़ीक पैँ-पोँ सँ, दोकानमे कीन-बेसाह करयवलासँ चहल-पहल छल । गामक खेत-खरिहान किसानसँ आबाद छल । पान-तमाकू तास-सतरंजक रंग ओहिना जमल छल । ओ तूफान जे तुरत आफदि ढाहऽ वला छल, वर्त्तमानक आँखिसँ इरोत छल ।

एमहर घड़ीमे टन-टन कऽ दू बाजले छल कि ओमहर भूकम्पक एलार्म जोरसँ गरजि उठल । शहर वायुयानक आबाज बुझलक । गामक लोकके ँ मोटर मोन पड़ल । एकाएक अड़ड़ड़ धम्म..... ।।

फेर की छल ? अट्टहास करैत प्रलय नाचय लागल । तूफानमे पड़ल नाव जकाँ पृथ्वी पलटय लागल । आकाशसँ बात कयनिहार पैंच-पैंच मकान पातालक चरण चूमय लागल। काटल डारि जकाँ देबाल उनटय लागल । आह ! कालक एकहि एँड़ मनुक्खके ँ चुट्टी जकाँ मीसी देलक । बसल घर उजारि देलक । प्रकृतिक नादिरशाहीमे बूढ़, बच्चा, पुरुख, स्त्री, काँच ओ पाकल वयसक लोकक निर्ममतासँ हत्या कऽ देल गेल । ओह ! किछुए पलमे हृदयक टुकड़ी बेटाके ँ बाप हेरा बैसल । मायक कोराक लाल लुटि गेल । भाइ ईंटाक ढेरीमे बहिनके ँ तकैत फिरैत छल । बहिन नोरसँ भाइक शवके ँ नहवय लगली ।

बूढ़क हिचकी, जुआनक विलाप आ बच्चाक चीत्कारसँ आकाश कानि उठल । पृथ्वीक हृदय टूक-टूक छल । नोर बहवैत-बहवैत नदीक आँखि फूलि गेल छल ।

शहर, गामक मुँह देखलक । कुहरैत महल कुटीसँ पानि माँङि रहल छल । गरीबीक गरदनिमे बाँहि दऽ धन अपन करुण कथा सुना रहल छल ।

खण्डहर बनयवलामे वीरेन्द्रोक मकान छल । ईंटा-पाथरक हड्डी-चूर चोटसँ पिसायवलामे वीरेन्द्रोक माय-बाप छलाह ।

★★★

ओहि दिन ललितक खोपड़ीमे वीरेन्द्र भूकम्पक भयंकरतेक बात कऽ रहल छल । एकटा साधू कतहु लगेमे खजुरी बजा-बजा कऽ गाबि रहल छल ।

फूटि जाइछ जगक घैल घड़ीमे
प्राणी-पानि बहि कऽ रहते फट दऽ काल छड़ीमे
दू दिन केर परेदशीके ँ की महल आर खोपड़ीमे

किछु काल पहिने धरि साधुक एहि अल्हड़ गीतके ँ ओ सुनबो नहि चाहितथि, मुदा आइ ओकर अक्षर-अक्षर सुनबामे दुनू तल्लीन छला । संसारके ँ महलक मोह छूटल हो वा नहि, मुदा ललितक तृष्णा मिझा गेल छल । आब ओ सन्तुष्ट छल खढ़ेक एहि खोपड़ीमे ।

अनुवाद : अमलेन्दु

आचार्य सुमन द्वारा लिखित ओ 1936 मे 'मिथिलांक' मे 'झोपड़ी मे' शीर्षकसँ प्रकाशित उक्त हिन्दी कथा 1934 केर भूकम्प पर आधारीत अछि ।

दुनू घर पहुँचल । ललितक माय दुनूके ँ प्रेमसँ जलपान करौलनि । वीरेन्द्रसँ मीठ-मीठ बात कयलनि । माता-पिताक प्रेम आ बहिनिक दुलार पुछलनि । ललित तँ अपन अवस्थापर लजा रहल छल, मुदा वीरेन्द्रके ँ खोपड़ीक स्वागत महलके ँ बिसरा देलक ।

★★★

ललितक पिता बातचीतक क्रममे जखन कखनो संतोषक महिमाकेर गीत गाबथि आ बीचमे श्लोकक उद्धरणके ँ हारमोनियमपर बाजाबथि तँ से ललितके ँ कर्णप्रिय नहि लगैक। बच्चा आ जुआनक अनुरागपर बूढ़क वैराग्य कोना विजय पाबय ? बुढ़ारीक संतोष नव वयसक पियास कोना मिझाबय ? नदी किनारक एकान्तमे ठाढ़ कुटी वासनाके ँ दुत्कारि सकैछ, मुदा वैह जँ महलक पड़ोसिया भऽ जाय तँ ओकरापर तृष्णाक जादू असरि कऽ जाय ।

ललितक वश चलैत आ जँ लक्ष्मीक एकोटा कटाक्ष ओकरापर पड़ैत तँ ओ एते दिनसँ आराम पहुँचौनिहार बुढ़ायल खोपड़ीके ँ तुरत उखाड़ि फेकैत । टूटल स्टूलके ँ जारन-घरक जेहलखाना देखबैत । फेर भवन ठाढ़ होइत । फैशनेबुल समानसँ कोठलीसभ सजि जाइत आ विशाल फाटकपर दरबान टहलैत नजरि अबैत !!

मुदा मोनक लड्डूसँ कखनो पेट भरलैए ? हवाइकिला मोनेक भूमिपर तँ बनौल जाइत अछि ।

मे

तहिया 24 इसवी छलै । आब तँ ओकरा बितला दस साल भऽ गेलै । ललितक खोपड़ी महल तँ नहि भऽ सकल, हँ ओ अपने बच्चासँ जुआन भऽ गेल । समयक दौड़ाहा दौड़ि रहल छल । एखन 34 इसवीक डाक ओकरा कान्हपर छलैक । जमानाक हाथमे केहन चिट्ठी भेटैत अछि, ई तँ घटनाक झोड़ी फुजलेपर पता लागि सकत ।

ओहि दिन आफिसक लेल 15 जनवरी छलैक । धार्मिक हिन्दू लोकनिक पंचांगक सोमवती माघी अमावस्या आ व्रती मुसलमान लोकनिक ईदक पूर्व दिन ।

भोर बीतल । दुपहर निकलि गेल । नित्य जकाँ दुनियाँ काज धन्धामे डूबल छल । स्कूल-कालेजक बेंच-कुर्सी ठेकानसँ भरल छल । आफिसमे क्लर्कक कलम ओही तेज गतिसँ दौड़ि रहल छल । प्रेसक टिखटिख आ खट-खुट किए बन्न रहैत ? बजारमे मोटरगाड़ीक पेँ-पोँ सँ, दोकानमे कीन-बेसाह करयवलासँ चहल-पहल छल । गामक खेत-खरिहान किसानसँ आबाद छल । पान-तमाकू तास-सतरंजक रंग ओहिना जमल छल । ओ तूफान जे तुरत आफदि ढाहऽ वला छल, वर्त्तमानक आँखिसँ इरोत छल ।

एमहर घड़ीमे टन-टन कऽ दू बाजले छल कि ओमहर भूकम्पक एलार्म जोरसँ गरजि उठल । शहर वायुयानक आबाज बुझलक । गामक लोकके ँ मोटर मोन पड़ल । एकाएक अड़ड़ड़ धम्म..... ।।

फेर की छल ? अट्हास करैत प्रलय नाचय लागल । तूफानमे पड़ल नाव जकाँ पृथ्वी पलटय लागल । आकाशसँ बात कयनिहार पैघ-पैघ मकान पातालक चरण चूमय लागल। काटल डारि जकाँ देबाल उनटय लागल । आह ! कालक एकहि एँड़ मनुक्खके ँ चुट्टी जकाँ मीसी देलक । बसल घर उजारि देलक । प्रकृतिक नादिरशाहीमे बूढ़, बच्चा, पुरुख, स्त्री, काँच ओ पाकल वयसक लोकक निर्ममतासँ हत्या कऽ देल गेल । ओह ! किछुए पलमे हृदयक टुकड़ी बेटाके ँ बाप हेरा बैसल । मायक कोराक लाल लुटि गेल । भाइ ईंटाक ढेरीमे बहिनके ँ तकैत फिरैत छल । बहिन नोरसँ भाइक शवके ँ नहबय लगली ।

बूढ़क हिचकी, जुआनक विलाप आ बच्चाक चीत्कारसँ आकाश कानि उठल । पृथ्वीक हृदय टूक-टूक छल । नोर बहबैत-बहबैत नदीक आँखि फूलि गेल छल ।

शहर, गामक मुँह देखलक । कुहरैत महल कुटीसँ पानि माँङि रहल छल । गरीबीक गरदनिमे बाँहि दऽ धन अपन करुण कथा सुना रहल छल ।

खण्डहर बनयवलामे वीरेन्द्रोक मकान छल । ईंटा-पाथरक हड्डी-चूर चोटसँ पिसायवलामे वीरेन्द्रोक माय-बाप छलाह ।

★★★

ओहि दिन ललितक खोपड़ीमे वीरेन्द्र भूकम्पक भयंकरतेक बात कऽ रहल छल । एकटा साधू कतहु लगेमे खजुरी बजा-बजा कऽ गाबि रहल छल ।

फूटि जाइछ जगक घैल घड़ीमे
प्राणी-पानि बहि कऽ रहते फट दऽ काल छड़ीमे
दू दिन केर परेदशीके ँ की महल आर खोपड़ीमे

किछु काल पहिने धरि साधुक एहि अल्हड़ गीतके ँ ओ सुनबो नहि चाहितथि, मुदा आइ ओकर अक्षर-अक्षर सुनबामे दुनू तल्लीन छला । संसारके ँ महलक मोह छूटल हो वा नहि, मुदा ललितक तृष्णा मिझा गेल छल । आब ओ सन्तुष्ट छल खढ़ेक एहि खोपड़ीमे ।

अनुवाद : अमलेन्दु

आचार्य सुमन द्वारा लिखित ओ 1936 मे 'मिथिलांक' मे 'झोपड़ी मे' शीर्षकसँ प्रकाशित उक्त हिन्दी कथा 1934 केर भूकम्प पर आधारीत अछि ।

महाकवि सुरेन्द्र झा 'सुमन' आ 'मन पड़ैत अछि'

- प. राधानन्दन झा

मैथिली वाङ्मयक प्राय: समस्त विधाकेँ अपन विलक्षण वैदुष्यसँ अपूर्व उत्कर्ष प्रदान कयनिहार महाकवि सुरेन्द्र झा 'सुमन' ओहि पारदर्शी तत्त्वज्ञमे अन्यतम छलाह जिनक जीवनक प्रत्येक कण ओ क्षणमे साहित्य अनुस्यूत भऽ गेल । सुमनजीक आत्म-कथात्मक कृति 'मन पड़ैत अछि' निस्संशय मैथिली साहित्य एवं भाषाक नन्दन-निकेतन अछि । अनुक्रमसँ उपसंहार धरि एहि संस्मरणात्मक कृतिमे लेखक अपन बहुपक्षीय जीवन-यात्राक तिक्त-मधुर अनुभवक वाह्य ओ अन्तर्निहित स्पन्दनकेँ दिग्दर्शित कयलनि अछि ।

सुमनजीक वर्चस्वी व्यक्तित्व विशिष्ट मानवोचित सद्गुणक कारण सद्य: हृदयग्राही रहल । हुनक सरल वाणीक मधुरिमा, मुक्त हास्यक विमलता, सहिष्णु स्वभावक कुलीनता, सुखदशीलक आर्यता, स्वार्जित पाण्डित्यक प्रौढ़ता, सद्य:फला स्मृति-ऊर्जाक प्रखरता, सामाजिक जीवनक उच्चता, निष्कपट व्यवहारक शालीनता, निस्पृह साहित्य-सेवाक महत्ता, सभ मिलि हुनक व्यक्तित्वकेँ विराट विशदता देलक । एहन मोहक, महान ओ उत्प्रेरक व्यक्तित्व आइ साहित्य-जगतमे सावधानीसँ तकलोपर सुलभ नहि होयत । सुमनजीक रचनामे विद्यमान हुनक विचार-वैभव, भाव-सौष्ठव, चिन्तन-धारा, कल्पना-शक्ति आ पाण्डित्य-प्रकर्षमे हुनक व्यक्तित्वक ओज-तेज सर्वत्र समुच्छलित अछि । सुमनजीक व्यक्तित्वमे हुनक लक्षण, स्वभाव, आचार-विचार, चरित्र, ज्ञान, साहित्य आदिक सत्ता मिश्रित रहल । तेँ ओहिमे मोहिनी शक्ति छैक जे सुहृदजनकेँ अपना दिस आकृष्ट करबाक संग परोत्कर्ष-सहिष्णुकेँ भरमेबो करैछ । सुमनजीक एहि कृतिमे तथ्यक योजना आ ओकर विस्तारमे सघन साहित्यिक शिलष्टताकेँ ताहि रम्य रूपक मनोहारी दर्शन होइत अछि ओ अन्यत्र दुर्लभ। एहिमे मैथिली भाषाक प्रायोगिक प्राञ्जलता आ ओकर मुग्ध कर साहित्यिक शैलीक सुष्ठुताक संयोग सुलभ भेल अछि । भाव-समन्वित भाषाक तरुणाइ, रसमयता आ लाक्षणिक चेतना द्वारा काव्यप्रौढ़ गद्यशिल्पी अद्भुत चित्र-सृष्टि कयने छथि । विकसित कला चेतनासँ समन्वित 'मन पड़ैत अछि' केर कथावस्तु ने मात्र साहित्यशास्त्र अपितु सौन्दर्यशास्त्रक अध्ययनक दृष्टिसँ सेहो अभिनय आयामक उद्भाविका अछि । एहि आत्मकथात्मक कृतिक सर्वोपरि वैशिष्ट्य ई अछि जे एहिमे सुमनजी अत्यन्त निश्छलतापूर्वक अपन जीवनगाथा उपन्यस्त कयने छथि । पुस्तकक पारायणसँ हुनक व्यक्तित्वक एहन अनेक पक्ष उद्घाटित होइत अछि जाहिसँ प्रेरणा अर्जित करब नितान्त आवश्यक अछि कोनो प्रकारक कपट, छल-छद्म आ अहंकार-भावसँ सर्वथा शून्य सुमनक एकान्त जीवन-लक्ष्य रहल मैथिली वाङ्मयक समुत्कर्ष आ संवर्द्धन ।

संस्कृत, हिन्दी, बङ्ला, मैथिली आ उर्दूक पारदर्शी पण्डित सुमनजी अनेक मौलिक एवं अनुदित ग्रन्थक माध्यमसँ मैथिली भाषाक श्री भण्डारकेँ जतेक समुन्नत कयलनि, सम्भवत: ओते क्यो आन नहि कयलनि अछि । संस्कृत आ बङ्ला भाषाक शीर्षस्थ कृति सभकेँ मैथिलीमे अनुवाद कऽ ओ मैथिलीक जे उपकार कयलनि ओकरा शब्दायित करब सरल नहि अछि । हम एक गोट सारस्वत योगीक भूमिकामे सुमनजीक दर्शन करैत छी । ई मिथिला-भूमिक परम सौभाग्य अछि जे एतय शैक्षिक, साहित्यिक आ सामाजिक अभ्युदयक संकल्पक संग प्रभु-प्रेरित देवी आशीर्वाद-स्वरूप सुमनजी सन योगीक अवतरण भेल । अवश्ये मिथिलाक धन्य धरतीपर हुनक परामुक्त पुरुषक रूपमे प्रादुर्भाव भेलनि । मिथिलाक महान विभूति सुमनजी एहन साहित्यकार भेलाह जे विपुल साहित्यक रचना कऽ स्वयंकेँ साहित्य-रचनाक विषय बना लेलनि । अनेक भाषविद् होइतो सुमनजी प्रधानत: मैथिलीएमे लिखलनि । हुनक मन मैथिलीमे रमल रहलनि आ मैथिली हुनका मनमे रमल रहलीह । सुमनजी मैथिलीक एहन शलाका पुरुष भेलाह जिनक नामरूप मैथिली एक प्रतिरूप बनि गेल। सुमनजी अपन अनासक्त कर्माचरणसँ ई प्रमाणित कयलनि जे गीता हुनक वैचारिकताक अनुकरणीय उदाहरण रहल । सुमजीकेँ विचारत: आ आचारत: गीताक प्रतिरूप बनबामे पूर्ण सफलता भेटलनि । ज्ञान, कर्म ओ भक्ति समन्वित पुरुषावतार छलाह सुमनजी । अपन आत्मकथात्मक कृति 'मन पड़ैत अछि' मे ओ स्वाधीन मनोभावकेँ स्वरित करबामे कतहु असमर्थता वा अक्षमताक अनुभव नहि कयलनि । अपन बहुसंख्यक कृति जकाँ एहूमे ओ जे असंख्य शब्द अंकित कयलनि ओहिमे हुनक सर्वतोभद्र अभ्युदयक आकांक्षासँ आकुल जीवनक मानसिक अभिव्यक्ति अक्षरित भेलनि अछि।

वस्तुत: सुमनजी एकगोट तपस्वी जकाँ आध्यात्मिक छत्रछायामे सरल सात्विक जीवन जिउलनि । कखनो ने भौतिक लाभसँ उल्लसित भेलाह, ने क्षतिसँ विचलित । सर्वदा समभाव रहलनि । हम साधुचरित सरस्वत-पुरुष आ ज्ञानक विश्राम-केन्द्र सरस्वत योगी सुमनजीक प्रतिभा विलक्षणातक प्रति नतशीर्ष छी ।

मैथिली साहित्यक स्तम्भ : सुमन

– प्रो० उषा चौधरी

आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'क बारेमे किछु कहनाइ सूर्यके ँ दीप देखैनाइ सदृश लगैत अछि । आचार्य सुमन आधुनिक मैथिली साहित्यक विशिष्ट स्तम्भ छलाह । मैथिली साहित्यक एक युग छलाह । आचार्य संस्कृतक प्रकाण्ड विद्वान छलाह । मैथिली साहित्यक प्राचीनता ओ नवीनताक सन्धि स्थलपर ठाढ़ रहथि । अपन बहुमुखी प्रतिभासँ अनेको कविता, कथा, उपन्यास, शोध-समीक्षा, आत्मकथा इत्यादि लिखने छथि ।

हिनक मौलिक रचनामे अर्चना, प्रतिपदा, साओन-भादव, कवि-नवतिका, पयस्विनी, सनेस, उत्तरा, अन्तर्नाद, मुक्तावली, कथा-यूथिका, गाम-धरती, ललना लहरी, चण्डीचर्या उगनाक दायादवाद (उपन्यास), मन पड़ै अछि (आत्मकथा), कुमार गंगानन्द सिंह (शोध-समीक्षा), दत्तवती ओ कृष्णावतरण (प्रबंध काव्य) मैथिली साहित्यपर संस्कृतक प्रभाव (समीक्षा) आदि प्रमुख अछि । एकर अतिरिक्त दर्जनो सम्पादित एवं अनुदित ग्रन्थ प्रकाशित छनि ।

सुमनजी मात्र साहित्यकारे नहि अपितु साहित्यकारक जन्मदाता सेहो रहलाह । हुनकासँ प्रभावित भऽ अनेको व्यक्ति साहित्यकार बनलाह । आचार्य लोकनि पर्यन्त हिनक पाण्डित्य एवं प्रतिभासँ मुग्ध भऽ हिनका कविक कवि मानलनि ।

मात्र साहित्यिके नहि समाजिक कार्यमे सेहो बढ़ि-चढ़ि कऽ भाग लैत रहथि । राजनीतिमे सेहो हिनक प्रवेश रहल, मुदा आजुक राजनीति हुनका कण्ठक नीचा नहि उतरैत रहनि। तेँ एखनुका राजनीतिसँ ओ फराक भऽ गेल रहथि । अल्पज्ञानी होइतहुँ, हम आचार्य सुमनजीके ँ श्रद्धा सुमन अर्पित करैत अपनाके ँ धन्य मानैत छी ।

कोन एहन फूल

– ललन कुमार झा

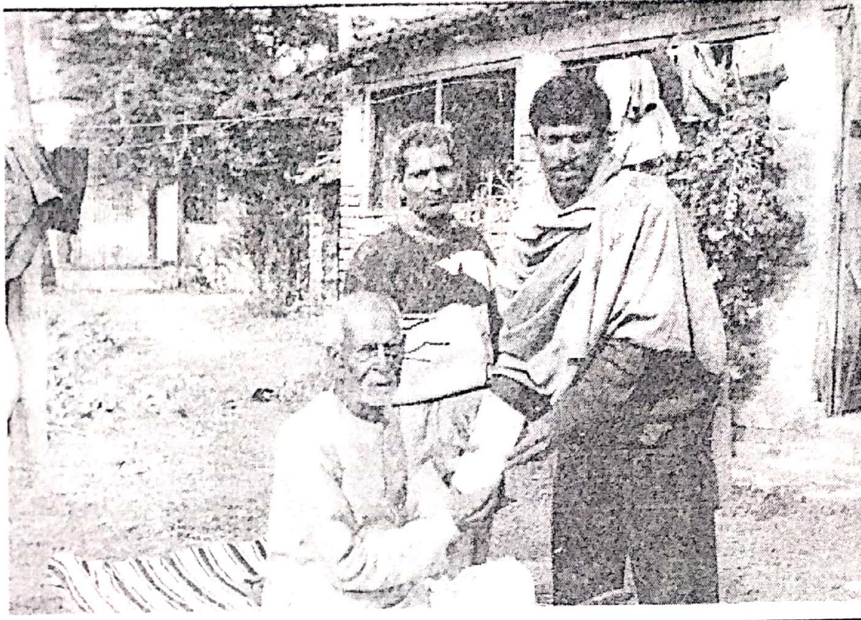
कोन एहन फूल छल,
गम-गमा गेल रंध-रंध बसातक
केहन छलै वेग,
पसारि गेल व्योम, फानि देबाल-फाटक ।
धन्य ई उपवन पानि एहन सुगंध निठाह,
लागय एहि प्रसादे, बगियाक घासो-पातो छोड़य
सुगंध धाह ।
मन होअय की लिखी ? छुच्छ मधुर पान करैत
रही, एहि बातक,
जे कोन एहन फूल छल, गम-गमा गेल रंध-रंध
बसातक ।
ऐ फूलक फुलेनाइक पराकाष्ठा,
कतेक कोड़हीक छल पथ द्रष्टा ।
आब कतय ओ सँझुका सानिध्य आशीष हाथ
उठल माथक,
आब चिंतन टा,
कोन-एहन फूल छल गम-गमा गेल रंध-रंध
बसातक ।
मैथिली उपवनक ई फूल ठीके नै रूपे पार्थिव,
मुदा भविष्य-दूर बड़ दूर शेष रहत ई सुगंध
अतीव ।
भविष्यक इनार मे होइत रहतै प्रति ध्वनि
कि उठतै झंकार घड़ी-घंटक
जे केहन एहन फूल दल गम-गमा गेल रंध-रंध
बसातक
सुमन लय 'सुमन' चरण बेर-बेर नमन
अपार्थिव आशीष झहड़ाबैत रही श्रद्धेय
आचार्य सुरेन्द्र झा सुमन
मुकुट बनि चमकैत रही युग-युग मैथिली मायक
माथक
आ हमरा मे गुन-गुनाइत रही

अदनोकेँ खास बनबैत छला सुमन

-किशोर कुमार झा 'सिक्किन'

मैथिली साहित्यक भीष्मपितामह आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' छोटसँ छोट साहित्यसेवीक आदर-सत्कार तहिना करैत छलाह जेना स्थापित कवि साहित्यकारक । हुनक एहि गुणक कारणेँ अदनो लोक अपनाकेँ खास अनुभव करैत छल।

हम जखन अपन कविताक पोथी 'वंदना' लऽकऽ हुनका लग पहुँचल रही ओ जाहि आह्लादसँ हमरा अपना लग बैसौने छलाह, मातृभाषा मैथिलीक सेवा लेल उत्साहित कयने छलाह ओ अन्यत्र भेटब असंभव । हमरा सन अल्पज्ञ साहित्यसेवीक पुस्तकक विमोचन करबा लेल तत्काल तैयार भऽ गेल छलाह । हमरा रोम-रोम पुलकित भऽ गेल, आनंदक हिलोरमे उबडुब करय लगहुँ आ अपनाकेँ महत्वपूर्ण अनुभव करय लगलहुँ । हठात विश्वास नहि भेल छल जे मैथिली साहित्यक सर्वोच्च शिखरपर विराजमान, संस्कृतक निविष्ट विद्वान, साहित्य अकादमी दिल्लीसँ सम्मानित आचार्य सुमन हमरा एतेक महत्त्वपूर्ण बना रहल छथि, मुदा ओ सत्य छल । अपन सरलताक लेल विशिष्ट परिचय बनौनिहार सुमनक आशीष हमरा सन-सन असंख्य मैथिलीसेवीकेँ भेटैत रहलैक आ ओ हुनकासँ मातृभाषा सेवाक भेटल पाथेयकेँ लऽ प्रगतिक शिखर पर चढ़ैत रहलाह, मातृमंदिर कँ नव साज-सज्जा देबा लेल गहना-गुड़िया गढ़ैत रहलाह । आइ सुमनक पार्थिव शरीर हमरा लोकनिक बीच नहि अछि, मुदा ओ अपन रचनामे, अपन साहित्यमे आ हमरा सन-सन आशीष पौनिहार उपकृतक मन-मंदिरमे युग-युग धरि जिबैत रहताह । वर्त्तमानक संगहि भविष्योक पथ-प्रदर्शन करैत रहताह आ मैथिली-मंदिरक मस्तूलपर चमकैत रहताह ।



किशोर कुमार झा 'सिक्किन' रचित कविता संग्रह 'वन्दना' क विमोचन करैत आचार्य सुमन, बीच मे माधवेन्द्र झा 'करूण'



डा0 राजेन्द्र प्रसाद देव

संरक्षक

जन्म- 17-2-1934

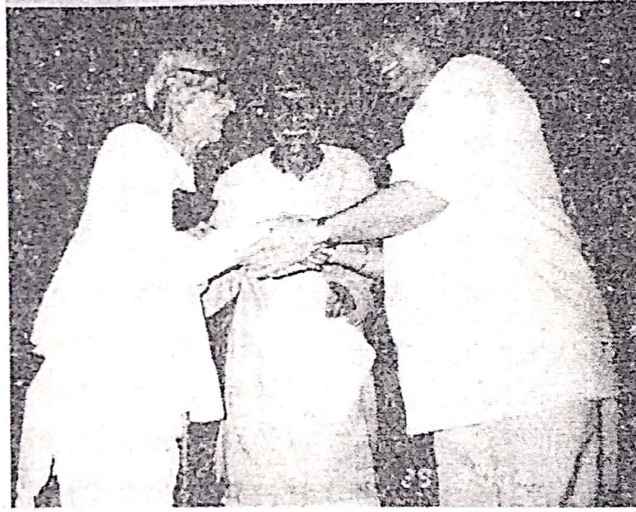
पिता- स्व. कुसुमलाल देव

माँ	- स्व. जानकी देवी
जन्म-स्थान	- ग्रा.+पो.- वसंतपुर
जिला	- सुपौल (बिहार)
शैक्षणिक योग्यता	- एम. बी. बी. एस. (बिहार वि.) विशेष-सिविल सर्जन, नवादा
साहित्यिक उपलब्धि	- पाँच किलोमीटर (हास्य-व्यंग्य)
प्रकाशनाधीन	- हमारी बिल्ली हमी से म्याऊँ
सम्मान पुरस्कार	- हरिशंकर परसाइ शिखर साहित्य सम्मान

पयस्विनी : सुरेन्द्र झा 'सुमन'

– डा. रामदेव झा

एकटा समालोचक आचार्य श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'क कवित्वमय व्यक्तित्वक तुलना हिमालयसँ कयने छलाह । वास्ताव मे सुमनजीक साहित्यिक व्यक्तित्व हिमालय सदृश अछि । सुमनजीके ँ 1971क वर्ष मे **पयस्विनी** नामक काव्य-संग्रहपर साहित्य-अकादेमीक पुरस्कार सँ सम्मानित कयल गेल छलनि । मुदा वास्तसवमे एहिसँ साहित्य-आकदमीक मैथिली साहित्य-क्षेत्रक पुरस्कार स्वयं गरिमा-मंडित भेल । तँ ई नहि बुझबाक थिक जे हिनक कृति समुदायमे **पयस्विनी** विशिष्टतर वा विशिष्टतम अछि । सत्य कहज जाय तँ **पयस्विनी** सँ पूर्वक ओ परवर्त्ती अनेक कृतिक नाम लेल जा सकैछ जे पुरस्कार्य अछि । अवश्ये नियमानुकूल पुरस्कारक हेतु विहित अवधिमे **पयस्विनी**ए प्रकाशित भेल छल ते ँ एही ग्रन्थ पर सुमनजी के ँ पुरस्कृत कयल गेलनि ।



साहित्य अकादमीक उपसचिव रमेश भसीनक संग आचार्य सुमन, बीचमे डा० रामदेव झा

मैथिली साहित्यक एहि महारथीक जीवन-यात्रा आरम्भ भेलनि आश्विन शुक्ल पंचमी, तदनुसार नओ अक्टूबर 1910 के ँ समस्तीपुर जिलास्थ बल्लीपुर ग्राम सँ । संस्कृत विद्यामे शिक्षा-दीक्षा प्राप्त कयल तथा मेधावी ओ प्रतिभाशाली छात्रक रूपमे अपन अध्यापक, तद्वत् विद्वद्वन्द, सहपाठी सबसँ प्रशंसित-अभिनन्दित होइत धर्मसमाज संस्कृत कालेज, मुजफ्फरपुर सँ साहित्याचार्योपाधि प्राप्त कयलनि । मैथिली तँ सहजहि मातृभाषा छलनि, ते ँ एहि मे साहित्य- रचना करब सहजात छलनि । संस्कृतमे काव्य-रचना करबाक क्षमताक परिचय ई आरम्भे सँ दैत रहलाह । एकरा संगहि बङला भाषा-साहित्यक अवगाहन सँ प्रेरणा स्रोत के ँ संबलित कयल तथा हिन्दीमे काव्य-रचनाक दिशामे प्रवृत्त भेलाह ।

आरम्भमे किछु दिन धरि उच्च विद्यालयमे अध्यापन कयलनि । तदुपरि 1935 मे राज दरभंगा द्वारा पोषित-प्रकाशित द्विभाषिक साप्ताहिक पत्र 'मिथिला-मिहिर'क सम्पादक नियुक्त भेलाह । 1953 ई. मे चन्द्रधारी मिथिला कालेज, दरभंगा मे मैथिली विषयक प्राध्यापक पद पर नियुक्तिक पश्चात् 1954 मे मिथिला-मिहिर' सम्पादक पदसँ मुक्त भऽ गेलाह आ ओही संग ओकर प्रकाशनो स्थगित भऽ गेल । मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापनाक पश्चात् रीडरक रूपमे विभागाध्यक्ष भेलाह आ 1974 मे सेवानिवृत्त भेलाह ।

ई छठम दशकक उत्तरार्द्ध सँ राजनीतिमे रुचि लेबऽ लगलाह । 1962 ओ 1969 मे विधान सभाक हेतु तथा 1971 मे संसदक हेतु चुनाव लड़लाह आ पराजित भेलाह । 1972 मे बिहार विधान सभाक सदस्य निर्वाचित भेलाह । 1974 मे जयप्रकाशक सम्पूर्ण क्रान्ति-आन्दोलनक क्रममे विधान-सभा-सदस्यतासँ त्याग-पत्र देलनि आ मीसाक अन्तर्गत जेल गेलाह । 1977 मे लोकसभाक सांसद निर्वाचित भेलाह। 1980 मे लोकसभा भंग भेलापर पुनः निर्वाचन मे उतरलाह, मुदा सफल नहि भेलाह ।

सुमनजी सर्वांशतः कथमपि नहि, आंशिके रूपमे राजनीति मे छथि । ई विशेष रूप सँ सामाजिक, सांस्कृतिक ओ साहित्यिक संस्था सँ सम्पृक्त रहैत अयलाह अछि । परामर्शदाता सदस्य, प्रधान मन्त्री, अध्यक्ष, संरक्षक इत्यादि मे सँ कोनो ने कोनो रूप मे संस्था सभसँ सम्बद्ध अनिवार्यता रहैत अयलनि अछि ।

1928क लग-पास मे सुमनजी आत्मविश्वासक संग संस्कृत, हिन्दी ओ मैथिली मे साहित्य-सर्जनक क्षेत्रे प्रवेश कयलनि । परन्तु 1935 मे मिथिला-मिहिरक सम्पादक नियुक्त भेलाह तँ सर्वात्मना सम्पादने कँ जेना समर्पित भ' गेलाह । सर्वप्रथम 'मिथिलांक'क सम्पादन कयल जे ओहि कालमे मिथिला-मैथिली विषयक लघु विश्व कोषक रूपमे स्थापित भेल । सुमनजी 'मिथिला मिहिर' मे मैथिलीक स्थान सुनिश्चित क' ओकरा व्यवस्थित रूप प्रदान कयलनि, जकरा माध्यम सँ मैथिलीक स्थापित साहित्यकारक संगहि अभिनव कवि-लेखक लोकनिक कविता, कथा, निबन्ध, आलोचना, जीवनी, संस्मरण, अनुवाद, महाकाव्य, खण्डकाव्य, उपन्यास, नाटक इत्यादि नियमित रूपसँ पाठकक समक्ष आब' लागल । एहि रूपमे सुमनजी मैथिली साहित्य ओ साहित्यकारक निर्माणमे अप्रतिम योगदान करैत रहलाह । परन्तु दोसर दिस अपन काव्य-रचनाक

सुमनजीक 'दत्तवती'

-डॉ० आदित्यनाथ झा

मिथिलाभाषा साहित्याकाशक मध्य महाकाव्य अन्तर्गत 'दत्तवती' अपन स्वतंत्र सत्ता वा व्यापकताक दृष्टिसँ अन्यतम अछि जकर महाकाव्यकर्त्ता थिकाह, मिथिलाभाषा साहित्य यात्राक प्रस्तर स्तम्भ (Mile - Stone) रूपमे ँ स्मरणीय प्रो० सुरेन्द्र झा 'सुमन' । ई सुमनजीक परम प्रौढ़ मस्तिष्कक प्रतिफलन थिक । सहज ऋत्या एहि महाकाव्यक प्रत्येक चरण, प्रत्येक शब्द किंवा सम्पूर्ण वर्णन रीतिमे कविक भाव गाम्भीर्य, अर्थ सौष्ठव, एवं पद्लालित्यक त्रिवेणी-संगम विद्यमान अछि ।

वस्तुतः सुमनजीक दत्तवती जीवन-जगत ओ संस्कृति-दर्शन सम्बन्धी विचारधाराक कवित्वमय आकर-ग्रन्थ थिक । दत्तवती महाकाव्य पचीस सर्गमे निबद्ध अछि जाहिमे छन्द वैविध्य आ सर्गान्तमे छन्द परिवर्त्तन क्रमेण विद्यमान अछि । वार्णिक एवं मात्रिक उभय छन्द श्रेष्ठत्त्वके ँ पूर्त्ति करैछ । कविवर सुमनजी एहि महाकाव्यक मंगलाचरणक क्रममे ब्रह्मक अभ्यर्थना कएलनि अछि-

चेतन-अवचेतन चित्तहिक तनुहिक दाहिन ओ वाम ।
परम ज्योतिहिक युग्म शिखा थिक दिनकर ओ हिमधाम॥

एहि महाकाव्यक नायक सद्वंश उत्पन्न क्षत्रिय राजकुमार मृगाङ्कदत्त छथि जे अवध नरेश अमरसेनक सुपुत्र एवं सज्जन समुदायक आश्रयधाम थिकाह । धीरोदात्त गुणान्वित विश्व-विश्रुत सूर्यवंशीय मृगांकदत्त श्रेष्ठ नायकत्वके ँ धारण कएने छथि-

उन्नत मणिरत्नक थिक श्रमेक निधान
नहि विश्राम क्षणो भरि लेथि महान् ।
जनहित नीलकण्ठ पचवथि विषयोग,
नायकके ँ पल-पल खटवेक नियोग ॥''

नायकक उपयुक्त नायिका सामाजिक जीवन मात्रहिक हेतु नहि अपितु महाकाव्यक हेतु सेहो अनिवार्य अंग थिक । तत्परक गुणरूप संस्कृत शशांकवती अपन नायक मृगांकदत्तक चन्द्रिकाक चकोरवत् विद्यमान छथि ! उज्जयिनीक नरेश कर्मसेनक सुपुत्री राजकुमारी स्वकीया प्रेमी, परम रसिका मुग्धा गुणक निधान थिकीह ।

स्थापत्यक आधार अछि गुणाढ्यक 'वृहत्तकथा' जे पैशाची भाषामे लिखित, किन्तु अप्राप्य रहबाक कारणे ओकरहि अग्रोपस्थापक सोमदेवक 'कथा- सरित सागर'क बारहम कथा शशांवती लम्बक सँ दत्तवतीक संयोजन इतिहासोद्भवं वृत्तम'केर मर्यादा अक्षुण्ण रखने अछि । जाहिमध्य महाकाव्यकर्त्ता सुमनजीक सहजात काव्य प्रतिभाक संग पुरुषार्थ चतुष्ट्यक निरुपण कएने अछि । एवं क्रमेण सज्जन विजय किंवा प्रशंसामे दुर्जनक पराजय एवं निन्दा स्वतः सिद्ध अछि ।

एहिमे विद्यमान समस्त सश्लेषण, विश्लेषण, सँ स्पष्ट विदित होइत अछि जे आचार्य सुमनक आलोच्य महाकाव्य दत्तवती एक सफल ओ सुन्दर महाकाव्यक श्रेष्ठ स्थान पर प्रतिष्ठित अछि ।

जकर आदि ने अंत

-हरिश्चन्द्र हरित

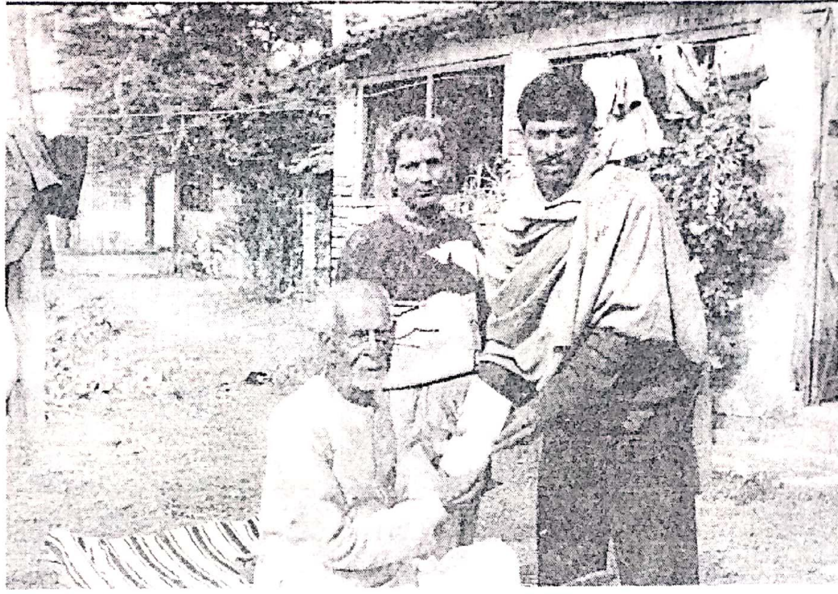
'सुमन'-सुरभिसँ सिंचित, सुन्दर-समय सरसतासँ सम्पूर्ण ।
दिक्-दिगन्त दस-दिशा दोग-दिस, दिव्यदीप देखल द्युतिपूर्ण ॥
परम-पुनीत-पुण्यमय-पावनि, प्रति-प्रस्तुत प्रिय-परिजन-पुरजन।
सहज-सिनेह समर्पित श्रद्धासँ, सादर 'सुमन'क श्री-सुमिरण ॥
वाणी-सतत अमर हुनक, लिखल-कहल जे कथ्य ।
तुलनालय सोचत जे क्यो; से ककर छैक सामर्थ्य ॥
सुकवि-सुकीर्तिक हेतु जे ँ, करथि साधना संत ।
एहेन कविक शत-शत नमन; जकर आदि ने अंत ॥
'सुर' छलाह साहित्यकेर, राजनीतिकेर 'इन्द्र' ।
'सुमन' मैथिली-मंदिरक, सद्यः छला 'सुरेन्द्र' ॥

अदनोकेँ खास बनबैत छला सुमन

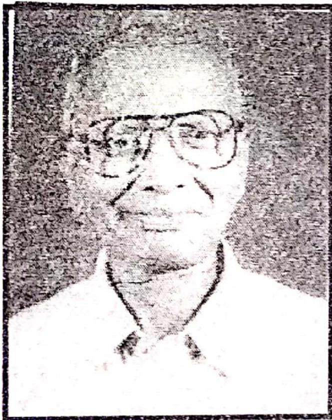
-किशोर कुमार झा 'सिक्किन'

मैथिली साहित्यक भीष्मपितामह आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' छोटसँ छोट साहित्यसेवीक आदर-सत्कार तहिना करैत छलाह जेना स्थापित कवि साहित्यकारक । हुनक एहि गुणक कारणेँ अदनो लोक अपनाकेँ खास अनुभव करैत छल।

हम जखन अपन कविताक पोथी 'वंदना' लऽकऽ हुनका लग पहुँचल रही ओ जाहि आह्लादसँ हमरा अपना लग बैसौने छलाह, मातृभाषा मैथिलीक सेवा लेल उत्साहित कयने छलाह ओ अन्यत्र भेटब असंभव । हमरा सन अल्पज्ञ साहित्यसेवीक पुस्तकक विमोचन करबा लेल तत्काल तैयार भऽ गेल छलाह । हमरा रोम-रोम पुलकित भऽ गेल, आनंदक हिलोरमे उबडुब करय लगहुँ आ अपनाकेँ महत्वपूर्ण अनुभव करय लगलहुँ । हठात विश्वास नहि भेल छल जे मैथिली साहित्यक सर्वोच्च शिखरपर विराजमान, संस्कृतक निविष्ट विद्वान, साहित्य अकादमी दिल्लीसँ सम्मानित आचार्य सुमन हमरा एतेक महत्त्वपूर्ण बना रहल छथि, मुदा ओ सत्य छल । अपन सरलताक लेल विशिष्ट परिचय बनौनिहार सुमनक आशीष हमरा सन-सन असंख्य मैथिलीसेवीकेँ भेटैत रहलैक आ ओ हुनकासँ मातृभाषा सेवाक भेटल पाथेयकेँ लऽ प्रगतिक शिखर पर चढ़ैत रहलाह, मातृमंदिर कँ नव साज-सज्जा देबा लेल गहना-गुड़िया गढ़ैत रहलाह । आइ सुमनक पार्थिव शरीर हमरा लोकनिक बीच नहि अछि, मुदा ओ अपन रचनामे, अपन साहित्यमे आ हमरा सन-सन आशीष पौनिहार उपकृतक मन-मंदिरमे युग-युग धरि जिबैत रहताह । वर्त्तमानक संगहि भविष्योक पथ-प्रदर्शन करैत रहताह आ मैथिली-मंदिरक मस्तूलपर चमकैत रहताह ।



किशोर कुमार झा 'सिक्किन' रचित कविता संग्रह 'वन्दना' क विमोचन करैत आचार्य सुमन, बीच मे माधवेन्द्र झा 'करूण'



डा0 राजेन्द्र प्रसाद देव

संरक्षक

जन्म- 17-2-1934

पिता- स्व. कुसुमलाल देव

माँ	- स्व. जानकी देवी
जन्म-स्थान	- ग्रा.+पो.- वसंतपुर
जिला	- सुपौल (बिहार)
शैक्षणिक योग्यता	- एम. बी. बी. एस. (बिहार वि.) विशेष-सिविल सर्जन, नवादा
साहित्यिक उपलब्धि	- पाँच किलोमीटर (हास्य-व्यंग्य)
प्रकाशनाधीन	- हमारी बिल्ली हमी से म्याऊँ
सम्मान पुरस्कार	- हरिशंकर परसाइ शिखर साहित्य सम्मान

दीप मिझाइए गेलै रे

- अशोक कुमार मेहता

एकेटा छल खिलल सुमन मौलाइए गेलै रे ।
ना रे, मैथिली मंदिरक दीप मिझाइए गेलै रे ॥

गंडक कछेरक कास-पटेर बीच बसल बल्लीपुर गाम
बीसम सदी केर पहिल दशक मे उगल सुरेन्द्र दिनमान
से सगरो आलोकित कऽ कऽ डुबिए गेलै रे ।

छलाह ओ कविक कवि उत्प्रेरक प्रेरक कवि ।
वाद ओ विवादक उपर, निखरल तैं सुमन छवि ॥
सेहो पुहुप छवि, हेराइए गेलै रे ।

कएलनि विचरण काव्य-गगन मे मैथिलीक जपैत नाम।
पटना सँ दिल्ली धरि चलैत, मिथिलाक बढ़एलनि मान ॥
से चिड़ै आब छोड़ि खोंता उड़िए गेलै रे ।



प्रकृति उदास

-रामदुलारी झा
बहेड़ी, पछवारी टोला, दरभंगा

सुमन अहाँ बिनु प्रकृति उदास
कोना हेतै भाषाक विकास
एना ने रूसियौ हे गुरूदेव
कहू शरण हम कक्कर लेब

मिथिलावासी-आँखिक नोर
रस्ता ताकय हेतै भोर ?
एना ने रूसू हे ऋषि सन्त
भाग्य हेतै हमरो बलबन्त ?

सुमन अहाँ सन अहीँ न आन
मिथिला मैथिलकेर अहँ प्राण



रिक्रियेशन क्लब बारीडीह (जमशेदपुर) मे 12 मार्च 2002 कँ प्रतिमा मिश्र सम्मान समारोहमे उपस्थिति बामासँ दहिना- डा० रामसेवक सिंह, किशोर कुमार झा 'सिक्किन', अभय कुमार यादव, राजनारायण मिश्र, डा० बच्चन पाठक सलिल, केदार महतो, डा० मेघन प्रसाद, मंजर सुलेमान, अशोक अविचल एवं प्रो० रवीन्द्र चौधरी

अन्तिम प्रणाम

-शेखर

5 मार्च 2002 । साँझ भऽ गेल छलै । राजकुमारगंज स्थित मैथिली मन्दिरक पछुअतिमे नालापर राखल बाँसक चचरी सान्ध्य-गोष्ठीमे अयनिहार पं० श्रीचन्द्रनाथ मिश्र अमर ओ डा० सुरेश्वर झा प्रभृत साहित्यसेवीक भारसँ आने दिन जकाँ चरमरायल छल । बहुत रास बात मोनमे नेने साहित्यकार लोकनि पहुँचल छलाह । नित्य चलयवला सान्ध्य-गोष्ठीक स्थायी अध्यक्ष मिथिला-मैथिलीक पर्याय आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'क साहचर्य पयबाक आनन्द क्षणेमे बिला गेलनि । मैथिली मन्दिरक दीप फकफका रहल छल । आचार्यकेँ घरघरी शुरइ छलनि । आने बेर जकाँ आकस्मिकता उपस्थित भेने डा० गणपति मिश्र आयल छलाह, मुदा एहिबेर दीपमे भक्ष्य नहि भरल जा सकल आ राति 11.30 बजे ओ मिझा गेल, मिथिला-मैथिली ओ मैथिलक गौरव-गाथाक फड़फड़ाइत पन्ना शान्त पड़ि गेल, एकगोट स्वर्णिम अध्याय समाप्त भऽ गेल, महाकाव्यक पूर्ण विराम भऽ गेल ।



चिर निद्रामे लीन आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'

6 मार्च 2002 । अहल भोरे जंगलमे लागल आगि जकाँ साहित्यमहारथी सुमनक महाप्रयाणक समाचार शहरमे पसरि गेल । तकर बाद धर्रोहि लागि गेल । स्नातकोत्तर मैथिली विभाग, ल०ना०मि०वि०वि० मे शोक सभा । हजारो लोकक आगमन । साहित्यकार, पत्रकार, राजनेता समाजसेवी आम जनता, शिक्षक, प्राध्यापक, कुलपति, प्रतिकुलपति, कुलसचिव, विभागाध्यक्ष ने जानि के के ? महामानवक उत्तर सिरमे जिलेबी गाछक सोझाँ पड़ल पार्थिव शरीर । फूलमालासँ लादल । टी०वी० कैमरा । श्रद्धांजलिक अन्नत सिलसिला । दरभंगाक पूर्व नगर विधायक शिवनाथ वर्मा, भाजपाक दरभंगा नगर अध्यक्ष संजय सरावगी भोरेसँ बेहाल । श्रद्धांजलि अर्पित करैत पं० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', डा० सुरेश्वर झा, डा० रामदेव झा, प्रो० शिवाकान्त पाठक, डा० फूलचन्द्र मिश्र 'रमण', पूर्व सांसद भोगेन्द्र झा, वैद्यनाथ चौधरी 'बैजू' आ डा० राममोहन झा, आदि । पूरा परिसर लोकसँ गजगज । सदर अनुमंडलाधिकारी रघुनाथ प्रसादक ओ आरक्षी उपाधीक्षक बलराम कुजूरक नेतृत्वमे गारद सलामी आ 1.15 बजे जयघोषक बीच बल्लीपुर (समस्तीपुर) लेल प्रस्थान ।

7 मार्च 2002 । बल्लीपुरमे आचार्यक पार्थिव शरीर हजारो लोकक समक्ष पूर्वाहनमे अग्निकेँ समर्पित । समाचार पत्र दैनिक जागरणमे प्रथम पृष्ठक संग भीतरमे प्रकाशित समाचार ओ चित्रावली, हिन्दुस्तानक प्रथम पृष्ठ ओ भीतर प्रकाशित खबरि, आज आ प्रभात खबरमे छपल रिपोर्ट पढ़बामे असंख्य लोक बेहाल । शोक-संवेदनाक चारूकात पसार । फेर शोक सभाक क्रम । विद्यापतिक सेवा संस्थान, अ०भा० मैथिली साहित्य परिषद्, ऋचालोक, अ०भा० साहित्य परिषद, आयोजन आदि संस्थाक सभा । विद्यापति सेवा संस्थान द्वारा दरभंगा नगर ओ बल्लीपुरमे सुमनक मूर्ति स्थापना, जिला परिषद अध्यख शफी अहमद द्वारा सुमनक नामपर सड़क समर्पित करबाक घोषणा, लक्ष्मीश्वर पब्लिक लाइब्रेरीमे मैथिली प्रोष्ठक स्थापना आ भाजपा, समता, कांग्रेस, लोजपा, जद (यू), माकपा, भाकपा, विपीपा आदि छलक लोक तथा विभिन्न संस्था-संगठन द्वारा लगातार शोक प्रकाश।

16 मार्च 2002 । श्राद्ध स्थल पर हजारो लोकक जुटान आ ओहीठाम महाकविकेँ अन्तिम प्रणाम देबाक लेल उमड़ल जनसमूह हुनक अमरत्वकेँ रेखांकित करैत ।

मिथिलाक महात्मा... (पृष्ठ 10 क शेष)

कहैत सुनलियनि जे अस्वस्थतामे पड़ल-पड़ल हम कल्पना करैत रहैत छी जे पेट्रोल-डीजल सन शब्दकेँ मैथिलीमे यथारूप स्वीकार कऽ लेल जाय अथवा ध्वनि साम्यक आधारपर ओकर प्रतैल दुष्तैलक रूपमे अनुवाद कयल जाय । सर्वतो भावेन विलक्षण प्रतिभासँ सम्पन्न सुमनजी जाहि क्षेत्रमे प्रवेश कयलनि ताहिमे महान सिद्ध भेलाह मुदा हमर दृष्टिमे हुनकर महानता एहि बातमे रहनि जे ओ अपनाकेँ कहियो महान् नहि बुझलनि, बल्कि हुनकर समक्ष छोटोसँ छौट जे क्यो जहिया अयलनि तकरा बोध करौलथिन जे अहीं महान् छी । सुमनजीक स्मारकक रूपमे हुनक नामपर सड़कक नामकरण, हुनकर मूर्त्तिक निर्माण अथवा हुनकर नामपर शोध संस्थानक स्थापना आदिक चर्चा कयल जा रहल छनि, मुदा हुनका लेल सर्वाधिक प्रिय मिथिला, मैथिली, मैथिलक उन्नयन लेल जौँ किञ्चितो कयल जतैक तऽ ओ हुनकर स्मृतिमे कयल सर्वोत्तम काज होयत ।

आचार्य सुमनक उत्तरा (पृष्ठ 27 क शेष)

उन्मुख छथि । आर्य संस्कृतिक विकासमे नारीक सहयोग कतेक महत्त्वपूर्ण रहैत आयल अछि ताहि प्रसंग उत्तरा द्वारा एकटा कीर्त्तिमान स्थापित भेल अछि । तेँ कहल जा सकैत अछि जे उत्तराक माध्यमसँ आचार्य सुमन भारतीय संस्कृतिक मौलिक वैशिष्ट्यक व्याख्या बड़ रोचक रीति सँ कएने छथि। भारत वर्षक इतिहास ओ संस्कृति एतेक गौरवमय कदापि नहि भऽ पबितै जँ उत्तरा सन नारी नहि अवतीर्ण भेल रहितथि । द्रोणाचार्यक व्यूहभेदन कय अभिमन्यु जे वीरगति प्राप्ति कएलनि से ओ उत्तरा सन नवविवाहिता द्वारा धैर्य ओ त्याग रूपी जयमाला पहिरयबाक कारणे । पश्चात् पाण्डव लोकनिक उत्तराधिकार बहन कयनिहार परीक्षितकेँ जन्म देबाक श्रेय सेहो एही उत्तराकेँ छनि । एवं प्रकारेँ खण्डकाव्यक पर्यावलोकन सँ स्पष्ट विदित होइत अछि जे आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' मैथिली साहित्यकेँ सूर्यवत् प्रतिभासित करैत छथि ।

सरस्वतीक मौन.... (पृष्ठ 17 क शेष)

राजनीतिज्ञ ओकर सम्पोषक । आचार्य सुमनमे कवि, पत्रकार, शिक्षक आ राजनीतिक कौशलकेर एकत्र दिग्दर्शन होइत अछि। 'आचार्य सुमन : अभिनन्दन-ग्रन्थ समिति' द्वारा जन्मतिथिक अवसरपर अभिनन्दन-ग्रन्थो समर्पित कयल जा रहलनि अछि। एहि बीच हुनक एकाएक अस्वस्थ भऽ जयबाक सूचना भेटल। हम जिज्ञासामे पहुँचलहुँ । शिष्टाचारक जे दू शब्द ओ कहलनि से हमरा सन अकिंचन लेल वरदाने सिद्ध होयत । ईश्वर करथु हमर आचार्यजी अविलम्ब स्वास्थ्य लाभ कऽ अपन बहुमुखी प्रतिभाक प्रकाशसँ हमरा लोकनिकेँ प्रकाशित करैत रहथु ।

चिट्ठी पत्री

★ मिथिला सुरभिक नवंबर 2001- जनवरी 2002 अंक पढ़ि आह्लादित भेलहुँ । श्री सिक्किन जाहि अध्यवसाय सँ पत्रिकाक स्तरोन्नयन मे लागल छथि, ओ सराहनीय अछि । हमर शुभाशंसा!

सुरेन्द्र झा,
आकाशवाणी, दरभंगा

★ 'मिथिला सुरभि'क प्रवेशांक देखबाक अवसर भेटले, पत्रिकामे लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्यमनीषी लोकनिक रचना पढ़ि हृदय गदगद भ' गेल । हमर अशेश शुभकामना अछि जे ई पत्रिका उत्तरोत्तर विकसित भऽ मातृभाषा मैथिलीक सेवा कऽ सकत ।

डा० प्रेमशंकर मिश्र

★ 'मिथिला सुरभि'क दुइ अंक भेटल तथा पढ़ल । मैथिलीक प्रौढ़ प्रतिष्ठित कवि, कथाकार एवं लेखक लोकनिक सारस्वन कृति सँ युक्त दूनू अंक पठनीय एवं संग्रहणीय अछि । हम पत्रिकाक दीर्घायु रहबाक शुभकामना करैत छी ।

डा० श्री दिनेश कुमार झा
पूर्व विभागाध्यक्ष मैथिली पटना विश्वविद्यालय

★ मिथिला-सुरभिक दू अंक प्राप्त भेल । प्रसन्नता भेल । पत्रिकाक संस्थापक सम्पादक श्री किशोर कुमार झा 'सिक्किन' हमरा वेश उत्साही मैथिलीभक्त साहित्यकार बुझि पड़ि रहल छथि । मिथिला मैथिलीकेँ एहने युवा कार्यकर्त्ताक आवश्यकता छैक । हम 'मिथिला-सुरभिक' संरक्षक सदस्य बनब स्वीकार करैत छी । कामना अछि जे ई पत्रिका एक सँ एक रचना छपि समस्त मिथिलामे अपन सुरभि पसौत रहय।

कमलकान्त झा

★ मिथिला सुरभि - 2 अंक प्राप्त भेल । एकर स्वरूप देखि मन पुष्ट भेल । एकर स्वरूप आ सामग्री जँ एहिना रहल तँ भविष्य नीक रहत । ई एहिना चलैत रहओ हमर समस्तर शुभ कामना अछि ।

ब्रजकिशोर ठाकुर

★ 'मिथिला सुरभि'क दोसर अंक प्राप्त भेल । एखुनका युगमे जाहि रूपे एकर प्रकाशक पत्रिका बहार करबाक साहस कयलनि अछि ओ निःसन्देह प्रशंसनीय कहल जा सकैछ ।
भविष्यमे सपना सचनमे सावधानी होएबाक चाही आ एगहि आधुनिक संचार क्षेत्रक जे उपलब्धि छैक तकर प्रयोग निरन्तर होइत रहय ताहिपर ध्यान सेहो देल जएबाक चाही । साहित्य संग टटका समाचार सम्प्रेषणक व्यवस्था पत्रिकाके विकाउ आ पाठकीय रुचिके अनुकूल बनाओत । एकर निरन्तर सफलताक कामना करैत छी ।

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'

'मिथिला-सुरभि'क अंक चुम्बकीय आकर्षण सँ भरल-पुरल अछि। जिज्ञाशु मैथिली प्रेमी ओ साहित्य सँ 'मिथिला-सुरभि' हमरा प्राप्त भेल । पढ़ि मन बहुत प्रसन्न भेल । नीक पत्रिका अछि ।

कामदेव झा
अध्यक्ष,
मिथिला चेम्बर आफ सनेस, कलकत्ता



प्रतिमा मिश्र

एहि अंकक माननीया सारस्वत प्रायोजिका

जन्म : १४ जनवरी १९४७, तरौनी (दरभंगा)

पिता : स्व० नीलाम्बर झा

पति : राजनारायण मिश्र, कवि समीक्षक

शिक्षा : गृह वाटिकामे स्वध्यायक बलेँ

सम्मान एवं पुरस्कार : काव्य भूषण, नेहरू शतवार्षिकी शील्ड, ज्योति पुरस्कार, डॉ० रामकुमार वर्मा पुरस्कार, काव्य वैभवश्री, आचार्य साहित्यश्री, काव्य कोकिल, विद्यावारिधि ।

गतिविधि : विभिन्न काव्य-संकलनक संग-संग कतेको पत्र-पत्रिका सभमे कविता नियमित रूपसँ प्रकाशित । आकाशवाणी, जमशेदपुरसँ कविताक प्रसारण। १९८७ इ० मे भोपालमे आयोजित "अखिल भारतीय जनवादी लेखक संघक" सम्मेलनमे सिंहभूमि जिलाक प्रतिनिधित्व । साहित्य सौरभ, इन्द्रधनुष, काव्य सरिता संग्रह-१९९९, साहित्यकार संदर्भ कोष, झरोखा-१९९९, हस्ताक्षर, प्रत्यन्वा आदि पोथी मे सह-लेखिका।

विधा : **हिन्दी**-गीत, गजल, भजन, कविता ।

: **मैथिली**-गीत, भजन, कविता ।

सम्प्रति : स्वतंत्र लेखन ।

सम्पर्क : द्वारा-स्व० रूद्र नारायण चौधरी
धर्मपुर, समस्तीपुर (बिहार)